सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 59, नई दिल्ली । शनिवार, 11 मई 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफल बनने के लिए सबकी सुनने की आदत होनी चाहिए परंतु करना वही चाहिए जो अपने मन को बेहतर लगे।

03 सर्वोच्च न्यायालय ने दिखाई अपनी सर्वोच्च ताकत
06 सैम पित्रोदा के माध्यम से पश्चिम की साजिश
08 वर्षा काग ने समाज का नाम किया रोशन

हॉर्स ट्राम से लेकर एसी डबल-डेकर तक, बेस्ट ट्रांसपोर्ट ने पूरे किए सेवा के 150 साल

मुंबई की मशहूर बेस्ट परिवहन सेवा, जिसने 9 मई, 1874 को घोड़ा गाड़ी वाली ट्राम सेवा शुरू की थी, ने इस गुरुवार को अपनी 150वीं वर्षगांठ मनाई।

इस मील के पत्थर का उत्सव मनाने के लिए, बेस्ट अनिक डिपो स्थित बेस्ट म्यूजियम में एक प्रदर्शनी का आयोजन कर रही है। जो ट्राम युग से लेकर आज तक अपनी सेवाओं के विकास को प्रदर्शित करती है। यह प्रदर्शनी गुरुवार से शनिवार तक सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे के बीच चलेगी। बेस्ट के एक प्रवक्ता के अनुसार, बम्बई (जैसा कि इसे उस समय जाना जाता था) में पहली घोड़ा गाड़ी वाली ट्रामें दो मार्गों पर चलती थीं: कोलाबा से क्रॉफर्ड मार्केट होते हुए पायधोनी और बोरी बंदर से पायधोनी। ये ट्रामें दो, छह या आठ घोड़ों द्वारा खींची जाती थीं, और 4-5 मील प्रति घंटे की गति से चलती थीं। उस समय यात्रियों को एक सवारी के लिए 1 आना का भुगतान करना पड़ता था।

ऐतिहासिक रूप से, बम्बई में एक सार्वजनिक परिवहन प्रणाली के विचार को सबसे पहले 1865 में एक अमेरिकी कंपनी द्वारा प्रस्तावित किया गया था। हालांकि, 1874 तक, बॉम्बे ट्रामवेज अधिनियम के तहत, पहली घोड़ा गाड़ी वाली ट्राम सेवा का उद्घाटन नहीं हुआ था। शुरुआत में, कंडक्टर टिकट जारी नहीं करते थे, लेकिन कुछ महीनों बाद इसमें बदलाव आया।

रिपोर्ट के अनुसार, 1907 में विद्युतीकरण के बाद इलेक्ट्रिक ट्रामों की शुरुआत के साथ शहर में एक क्रांतिकारी बदलाव आया। एक इतिहासकार ने याद किया कि सिर्फ एक दशक से ज्यादा समय बाद, डबल डेकर ट्रामें यात्रियों की खुशी के लिए सड़कों पर एक आम दृश्य बन गईं।

1926 तक, मोटर बसें परिवहन का एक लोकप्रिय साधन बन गईं, जिसमें लगभग छह लाख यात्री रोजाना सफर करते थे। शुरुआत में, ये बसें सिंगल-डेकर थीं, लेकिन 1937 में मुंबई ने अपनी पहली डबल-डेकर बस देखी। जबकि यह शहर कभी करीब 900 नॉन-एसी डबल-डेकर समेटे हुए था। उन्हें सितंबर 2023 तक धीरे-धीरे हटा दिया गया। जिससे 50 एसी डबल-डेकर और कुल 3,000 बसों के बेड़े के लिए रास्ता बना दिया गया।

अतीत को याद करते हुए, एक परिवहन उत्साही ने 70 के दशक की ट्रेलर बसों के बारे में बताया। जहां दो बसों को जोड़ा जाता था, जो कोलाबा/बैलार्ड पियर से माहिम तक परिवहन प्रदान करती थीं।

हालांकि, कुछ लोगों के लिए, पुरानी यादें 70 के दशक के आखिर की नॉन-एसी डीजल डबल-डेकर से जुड़ी हुई हैं। जो सामने की तरफ हवा के झोंके का सामना करते हुए सवारी करने का एक यादगार अनुभव प्रदान करती थीं। जैसा कि चर्चगेट में सिडेनहैम कॉलेज जाने वाले मार्ग का नियमित रूप से इस्तेमाल करने वाले एक यात्री ने याद किया।

रिपोर्ट के अनुसार, 1907 में विद्युतीकरण के बाद इलेक्ट्रिक ट्रामों की शुरुआत के साथ शहर में एक क्रांतिकारी बदलाव आया। एक इतिहासकार ने याद किया कि सिर्फ एक दशक से ज्यादा समय बाद, डबल डेकर ट्रामें यात्रियों की खुशी के लिए सड़कों पर एक आम दृश्य बन गईं। 1926 तक, मोटर बसें परिवहन का एक लोकप्रिय साधन बन गईं, जिसमें लगभग छह लाख यात्री रोजाना सफर करते थे।

स्टेयरिंग फेल होने से गड्ढे में गिरी स्कूल बस, 12 बच्चे घायल, मची चीख-पुकार...

परिवहन विशेष न्यूज

प्रयागराज। झूंसी थाना क्षेत्र के अंदावा स्थित एक पब्लिक स्कूल की बस बृहस्पतिवार सुबह फूलपुर, इफको, बाबूगंज, चिरौड़ा आदि गांवों से बच्चों को लेकर जैसे ही बगई खुर्द गांव के सामने पहुंची थी कि अचानक बस की स्टेयरिंग फेल हो गई। इससे तेज रफ्तार बस सड़क किनारे चार फिट गहरे गड्ढे में चली गई।

बच्चों से भरी स्कूल बस की स्टेयरिंग फेल हो जाने की वजह से अनियंत्रित हुई बस सड़क किनारे गड्ढे में चली गई। इस हादसे में दर्जन भर बच्चे घायल हो गए। चीख-पुकार मची तो आसपास के लोग वहां पहुंच गए और घायल बच्चों को उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया।

झूंसी थाना क्षेत्र के अंदावा स्थित एक पब्लिक स्कूल की बस बृहस्पतिवार सुबह फूलपुर, इफको, बाबूगंज, चिरौडा आदि गांवों से बच्चों को लेकर जैसे ही बगई खुर्द गांव के सामने पहुंची थी कि अचानक बस की स्टेयरिंग फेल हो गई। इससे तेज रफ्तार बस सड़क किनारे चार फिट गहरे गड्ढे में चली गई। अचानक बस में हुए इस हादसे से

बैठे बच्चे सहम गए।

घटना में बाबूगंज बाजार निवासी दसवीं कक्षा के छात्र अनुज कुमार यादव, आकाश कुमार, आदर्श कुमार, तथा 11वीं कक्षा की छात्रा साक्षी, मनजीत कुमार गुप्ता, नौवी कक्षा की शैलजा यादव, तथा आठवीं कक्षा की सृष्टि यादव को चोटें आईं हैं। घटना की सूचना पर पहुंचे अभिभावकों ने उन्हें स्थानीय चिकित्सालय में इलाज के लिए भर्ती कराया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद अभिभावक अपने बच्चों को लेकर घर चले गए। वहीं अन्य बच्चों को स्कूल की दूसरी बस द्वारा उनके घरों को पहुंचाया गया।

खटारा बसों में ढोए जा रहे बच्चे, आक्रोशित हैं अभिभावक

क्षेत्र के अभिभावकों का आरोप है कि महंगी फीस व वाहन शुल्क के नाम पर विद्यालय प्रबंधन द्वारा लंबी धनराशि अभिभावकों से वसूल तो की जाती है, लेकिन विद्यालय प्रबंधन वाहनों की समय-समय पर फिटनेस की जांच नहीं कराते हैं। जिससे आए दिन इस तरह की घटनाएं के आम हो गई हैं। बाबूगंज बाजार निवासी अजय कुमार गुप्ता ने कहा कि बाबूगंज, फूलपुर, झूंसी क्षेत्र में दर्जनों विद्यालयों में खटारा अप्पे, ई रिक्शा तथा मैजिक वाहनों से बच्चों को मानक के विपरीत बैठाकर उनके जीवन से खिलवाड़ कर रहे हैं। जबकि शासन द्वारा निर्देश है कि समय-समय पर विद्यालयों में संभागीय परिवहन विभाग द्वारा कैंप लगाकर सुरक्षित यातायात व विद्यालय प्रबंधन को ऐसे वाहनों को न चलने के लिए निर्देश देने चाहिए।

जल्द तैयार होगा फरीदाबाद-जेवर एक्सप्रेसवे 31 किलोमीटर रह जाएगी 90 किलोमीटर की दूरी

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा के फरीदाबाद को उत्तर प्रदेश के नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट से जोड़ने के लिए फरीदाबाद जेवर एक्सप्रेसवे जल्द तैयार होने वाला है। नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने पिछले साल इस प्रोजेक्ट को शुरू किया था। इस एक्सप्रेसवे के बन जाने से दोनों राज्यों के बीच कनेक्टिविटी बेहतर होगी। इससे ट्रांसपोर्ट नेटवर्क बढ़ने की उम्मीद की जा रही है। इसके अलावा पूरे फरीदाबाद जेवर कॉरिडोर के इकोनामिकल डेवलपमेंट में जरूरी योगदान भी मिलेगा। यह एक्सप्रेसवे 6 लेन का होने वाला है, यह एक्सप्रेसवे नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को फरीदाबाद के सेक्टर 65 से जोड़ने वाला है। फरीदाबाद जेवर एक्सप्रेसवे उत्तर प्रदेश के गौतम बुद्ध नगर अमरपुर, झुप्पा और वल्लभनगर जैसे

गांव से होकर गुजरेगा। रिपोर्ट के मुताबिक, हरियाणा में एक्सप्रेसवे से कलां, मोहाना, नरहवाली और अन्य गांव जुड़ सकते हैं। इस प्रोजेक्ट के शुरू होने के आसपास के नगर पालिकाओं में रियल एस्टेट की मांग में बढ़ोतरी हो सकती है, इसके अलावा स्टेट के दाम और इकोनॉमिक एक्टिविटीज में भी तेजी आने की उम्मीद जताई जा रही है। **इस एक्सप्रेसवे के बनने के बाद फरीदाबाद और जेवर के बीच की दूरी 90 किलोमीटर से घटकर 31 किलोमीटर रह जाएगी।** हरियाणा के मोहना गांव में एक इंटरचेंज पर भी काम किया जा रहा है। वह कुंडली, गाजियाबाद, पलवल, एक्सप्रेसवे को जेवर हाईवे से जोड़ेगा। इस स्थान से मोहना गांव के बीच की दूरी लगभग 6.5 किलोमीटर है। इसके अलावा मुहानाबाद रोड पर एंट्री और एग्ज़िट पर भी काम किया जा रहा है।

पर्यावरण पाठशाला : एक भूला हुआ समुदाय : सड़क किनारे भूखे प्यासे मवेशी और पक्षी : अंकुर

दिल्ली एनसीआर और अन्य शहरी शहरों के हलचल भरे महानगरों में, ऊंची गगनचुंबी इमारतों और हलचल भरी सड़कों के बीच, एक भूला हुआ समुदाय मौजूद है जिस पर अक्सर किसी का ध्यान नहीं जाता है - सड़क किनारे मवेशी और पक्षी। ये विनम्र प्राणी, जो कभी पारिस्थितिकी तंत्र के अभिन्न अंग थे, अब भोजन और पानी की गंभीर कमी का सामना करते हुए, कंक्रीट के जंगल में जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। तेजी से शहरीकरण के साथ, हरे स्थान कम हो गए हैं, जिससे इन जानवरों के लिए प्राकृतिक आवास और भोजन स्रोतों के लिए बहुत कम जगह बची है। फलों के पेड़, जो कभी बहुतायत में होते थे, अब दुर्लभ हो गए हैं, जिससे उनकी दुर्दशा और बढ़ गई है।

सूरज की चिलचिलाती गर्मी में, उनका अस्तित्व और भी अधिक अनिश्चित हो जाता है, क्योंकि निर्जलीकरण और भुखमरी लगातार खतरे के रूप में मंडराती रहती है। फिर भी, इस शहरी अराजकता के बीच, करुणा और सहानुभूति का अवसर मौजूद है। इन शहरों के निवासियों का यह दायित्व है कि वे मनुष्यों और जानवरों के बीच सहजीवी संबंध को पहचानें और इस ग्रह के अपने साथी निवासियों की ओर मदद का हाथ बढ़ाएं। सड़क किनारे मवेशियों और पक्षियों को भोजन और पानी उपलब्ध कराने से न केवल उनकी पीड़ा कम होती है, बल्कि पर्यावरण के प्रति परस्पर जुड़ाव और नेतृत्व की भावना भी बढ़ती है। इसके अलावा, इन जानवरों की देखभाल अहिंसा (अहिंसा) और करुणा के सिद्धांतों के अनुरूप है जो भारत के सांस्कृतिक ताने-बाने में गहराई से समाए हुए हैं। यह सुनिश्चित करके कि इन प्राणियों की बुनियादी आवश्यकताओं तक पहुंच है, हम दया और सहानुभूति के मूल्यों को कायम रखते हैं जो हमें एक समाज के रूप में परिभाषित करते हैं।

शहरी परिदृश्य के निवासियों के रूप में, हमारे स्थान को साझा करने वाले सभी प्राणियों की भलाई सुनिश्चित करना हमारी नैतिक अनिवार्यता है। सड़क किनारे मवेशियों और पक्षियों के प्रति करुणा का हाथ बढ़ाकर, हम न केवल अपने नैतिक दायित्वों को पूरा करते हैं, बल्कि सभी के लिए एक अधिक सामंजस्यपूर्ण और टिकाऊ दुनिया बनाने की अपनी प्रतिबद्धता की भी पुष्टि करते हैं।

indiangreenbuddy@gmail.com

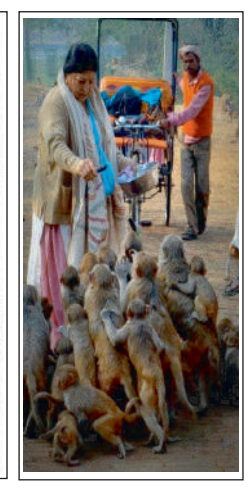

सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा : अतिक्रमण Vs प्रवर्तन

परिवहन विशेष

सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में, दो महत्वपूर्ण तत्व स्तंभ के रूप में खड़े हैं, जो व्यवस्था और सुरक्षा के परिदृश्य को आकार देते हैं:

अतिक्रमण Vs प्रवर्तन एक दूसरे के विरोधाभासी हैं, आइए दोनों की प्रकृति को समझें

अतिक्रमण: अतिक्रमण का तात्पर्य यातायात प्रवाह, पैदल यात्रियों की आवाजाही या सुरक्षा क्षेत्रों के लिए निर्दिष्ट स्थानों पर अनधिकृत कब्जे या घुसपैठ से है। यह विभिन्न रूपों में प्रकट हो सकता है, जैसे अवैध पार्किंग, फुटपाथों में रुकावट, या साइकिल चालकों या आपातकालीन वाहनों के लिए आरक्षित लेन पर अतिक्रमण।

अतिक्रमण के परिणाम कई प्रकार के होते हैं, असुविधा से लेकर ख़तरे तक। अवरुद्ध रास्ते पैदल चलने वालों की गतिशीलता में बाधा डालते हैं, जिससे उन्हें सड़कों पर और संभावित नुकसान के रास्ते पर जाने के लिए मजबूर होना पड़ता है। अवैध पार्किंग से यातायात प्रवाह बाधित होता है, जिससे भीड़भाड़ होती है और दुर्घटना का खतरा बढ़ जाता है। इसके अलावा, अतिक्रमण यातायात बुनियादी ढांचे की प्रभावशीलता को कमजोर करता है, जिससे परिवहन प्रणालियों के सुचारू संचालन में बाधा आती है।

अतिक्रमण को संबोधित करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें जन जागरूकता अभियान, नियामक उपाय और शहरी नियोजन पहल शामिल हों। निर्दिष्ट स्थानों का पालन करने के महत्व के बारे में जनता को शिक्षित करने से साझा सार्वजनिक डोमेन के लिए सम्मान की संस्कृति को बढ़ावा मिलता है। इसके साथ ही, स्पष्ट संकेत और निवारक दंड के साथ मजबूत प्रवर्तन तंत्र, व्यक्तियों को अतिक्रमणकारी व्यवहार में शामिल होने से रोकते हैं। इसके अलावा, शहरी योजनाकारों को अतिक्रमण की संभावना को कम करने के लिए पैदल यात्रियों की पहुंच, पार्किंग सुविधाओं और समर्पित लेन को ध्यान में रखते हुए बुनियादी ढांचे को डिजाइन करना चाहिए।

प्रवर्तन: प्रवर्तन सड़क सुरक्षा की रीढ़ के रूप में कार्य करता है, कानून के शासन को कायम रखता है और स्थापित नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करता है। इसमें कानून प्रवर्तन एजेंसियों, यातायात अधिकारियों और न्यायिक प्रणालियों की गतिविधियों को शामिल किया गया है, जिन्हें यातायात कानूनों के उल्लंघनकर्ताओं की निगरानी करने, पकड़ने और दंडित करने का काम सौंपा गया है।

प्रभावी प्रवर्तन कई मोर्चों पर संचालित होता है, जिसमें निवारक उपाय और उत्तरदायी कार्रवाई दोनों शामिल हैं। दृश्यमान पुलिस उपस्थिति एक निवारक के रूप में कार्य करती है, संभावित अपराधियों को उल्लंघन करने से रोकती है। कैमरे और सेंसर सहित यातायात निगरानी प्रणाली, सड़कों की निगरानी और वास्तविक समय में उल्लंघन का पता लगाकर प्रवर्तन प्रयासों को बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त, समय-समय पर जांच चौकियां और गश्त अधिकारियों को गैर-अनुपालन के मामलों की शीघ्रता से पहचान करने और उनका समाधान करने में सक्षम बनाती हैं।

डॉ अंकुर शरण, राष्ट्रीय मुख्य परिवहन एवं योजना अधिकारी
सड़क सुरक्षा ओमनी फाउंडेशन
roadsafetysquad@gmail.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

पर्यावरण पाठशाला : गौरैया संरक्षण और पक्षी प्रेम जीवन का हिस्सा बन गया है : - संजय

भारतीय सूचना सेवा के वरिष्ठ अधिकारी संजय कुमार पक्षी प्रेमी यों कहे गौरैया की जब चर्चा होती है तो इनका नाम सामने आता है। सालों से गौरैया संरक्षण मुहीम चला रहे हैं। गौरैया संरक्षण पर अब तक तीन पुस्तकें- अभी मैं जिन्दा हूँ...गौरैया, ओ री गौरैया और आओ गौरैया प्रकाशित है साथ ही लगातार गौरैया और अन्य पक्षियों पर मीडिया में लिख कर संरक्षण का सन्देश देते हैं।

बिहार, भागलपुर के मूलनिवासी हैं, जन्म आरा में हुआ है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविध्यालय से पत्रकारिता में डिप्लोमा एवं एनओयू से स्नातकोत्तर हैं। पत्रकारिता की शुरूआत वर्ष 1987 में भागलपुर शहर से किया। राष्ट्रीय व स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर ढेरों आलेख, रिर्पोट-समाचार, फीचर आदि प्रकाशित। आकाशवाणी से वार्ता प्रसारित और रेडियो नाटकों में भागीदारी रही, साथ ही नुक्कड़ नाट्य आंदोलन के शुरूआती दौर से ही जुड़ाव एवं सक्रिय भूमिका रही। मीडिया, वंचित वर्ग, सामाजिक सरोकर, पर्यावरण एवं -जीव-जंतु संरक्षण के मुद्दे को लेकर लगातार लेखन जारी है। आकाशवाणी के समाचार प्रभाग और दूरदर्शन के समाचार सेवा प्रभाग से जुड़े। अब तक 14 पुस्तकें प्रकाशित - 1.तालों में ताले अलीगढ़ के ताले, 2.नागालैंड के रंग बिरंगे उत्सव, 3.बिहार की पत्रकारिता तब और अब, 4.आकाशवाणी समाचारकी दुनिया, 5.पूरब का स्वीट्जरलैंडःनागालैंड, 7.रेडियो पत्रकारिता, 1857ःजनक्रांति के बिहारी नायक, 8.मीडिया में दलित ढूंढते रह जाओगे, 9.मीडियाःमहिला, जाति और जुगाड़, 10 .मीडिया में दलित, 11.मैं अभी जिन्दा हूँ...गौरैया, 12.ओ री गौरैया 13.जुल्फिकार अली 1857 के गुमनाम योद्धा और 14.आओ गौरैया प्रकाशित है। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा 'नवोदित साहित्य सम्मान', बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, स्वतंत्रता सेनानी तिलकामाँझी राष्ट्रीय सम्मान के अलावे विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा कई सम्मानों से सम्मानित हो चुके हैं। गौरैया संरक्षण में सक्रिय है और बिहार सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग से गौरैया संरक्षण के लिये कई बार सम्मानित हो चुके हैं। फोटोग्राफी का बचपन से शौक है। चिड़ियों, ख़ास कर गौरैया की फोटोग्राफी रोजाना करते हैं अबतक दस हजार से ज्यादा गौरैया और अन्य चिड़ियों की तस्वीर खींच चुके हैं। सम्प्रति, वर्ष 1993 से भारतीय सूचना सेवा में है। फिलहाल, केन्द्रीय संचार ब्यूरो-प्रेस इन्फोर्मेशन ब्यूरो, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, पटना में उप निदेशक के पद पर कार्यरत हैं।

पत्रकारिता, फिर सरकारी मीडिया में आने के बाद पक्षी प्रेम का अलख जगा रहे हैं। जानते है उन्ही से उनकी जुबानी कैसे जुड़े पक्षी प्रेम से। पत्रकारिता की शुरूआत वर्ष 1987 में भागलपुर शहर से किया। जहाँ नौकरी मिलने के बाद लोग आराम की जिन्दगी जीने लगते हैं वहीँ संजय कुमार ने पक्षियों की दुनियां से आपने को जोड़ रखा हैं। वे बताते हैं जहां तक पक्षियों की दुनियां से मेरे लगाव का सवाल है तो इनसे जुड़ने के बाद स्वतः पता चलेगा। ये आपके जीवन में सुकून लाते हैं। जीने की राह सिखाते हैं। मेरी कहानी रोचक है। घटना जून 2007 की है जब तपती दोपहर में चिड़ियों की आवाज सुनाई पड़ी। जाकर देखा तो, गौरैया रसोईघर में प्यास बुझाने के लिए नल में चोंच लगा कर पानी पीने की कोशिश कर रही थी।मेरे आने से उड़ कर खिड़की के बाहरी हिस्से पर जाकर बैठ गयी, उसके चोंच खुले थे गर्मी से वह हांफ रही थी। दृश्य देख दिल भर आया। तुरंत, नल को खोल दिया और वहां से हट गया। गौरैया पानी के पास आयी, प्यास बुझाई और चली गयी। मेरे मन में सवाल उठने लगा। इस नन्ही सी जान को पानी नहीं मिला, तभी तो पानी खोजते तपती गरमी में आयी। इंसान तो पानी मांग सकता है लेकिन बेचारी बेजुबान पक्षी कैसे मांगेगी। कौन सुनेगा उसकी पुकार। मैंने तुरंत घर में रखे आइस्क्रीम के डब्बे में पानी भरा और रसोईघर की खिड़की एवं बालकोनी में रखे गमले में उसे रख दिया। साथ ही रेलिंग पर चावल के दाने को भी डाल दिया, फिर क्या था गौरैया को दाना-पानी मिलने लगा। पहले दो-चार आयी। फिर उनकी संख्या बढ़ती ही गयी और आज मेरा बालकोनी उनका आशियाना बन चुका है। समय -समय पर दाना-पानी के लिए आती जाती रहती है। गौरैया के आने के साथ-साथ, दाना-पानी के लिए कबूतर, बुलबुल, इंडियन राबिन, पंडूक, तोता, मैना, कौआ, सन बर्ड सहित कई तरह की चिड़ियों के आने का जो सिलसिला चला, आज तक जारी हैं। चिड़ियों के साथ लगाव पहले शौक बना, फिर दोस्ती हुई और आज उनका संरक्षण मुहिम बन गया है। यों कहें मेरे जीवन का हिस्सा बन चुका हैं। गौरैया के साथ-साथ दूसरी चिड़ियों के प्रति लगाव गहराता चला गया। क्योंकि पानी के लिए गौरैया को तड़पते देखा दिल भर आया था।

लगातार जुड़ाव से इन बेजुबानों की भाषा को समझने लगे और इनकी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाना दिया। लगातार दाना पानी देने के साथ-साथ इनके साथ मेरा आत्मीय एवं दोस्ताना जुड़ाव होता गया। जब पानी और दाना नहीं रहता था तो गौरैया और दूसरी चिड़ियाँ शोर मचाने लगती हैं। कभी-कभी तो दरवाजे के पास भी आ जाते हैं। घर में प्रवेश कर जाते हैं और इतना शोर मचाते हैं कि मुझे मालूम हो जाता है कि दाना-पानी नहीं है। गौरैया और तोता दोनों मेरी बातों को समझते हैं। वही, दूसरी चिड़ियों से मैना जो काफी लड़ने झगड़ने लगती है उसे मुझे समझाना पड़ता है। यही नहीं, कौआ को माना जाता है कि वह दुष्ट होता है। पानी के बर्तन में कहीं से मांस का टुकड़ा लाकर डाल देता है। ऐसे में गौरैया या तोता गंदा पानी नहीं पीते हैं। मैंने कई बार उसे समझाया कि पीने का पानी है। मांस का टुकड़ा मत डालो। धीरे-धीरे वह मेरी बातों को समझने लगा। हालांकि उसकी आदत है कि जब कोई चीज खाता है तो उसे पानी में डुबो कर उसे खाता है। जहां तक दोस्ती का सवाल है तो अगर आप थोड़ा सा प्यार देंगे दोस्त बनाएंगे, तो इंसान क्या पशु पक्षी सब आपकी ओर खींचे चले आएंगे। जैसे ही आप उन्हें पकड़ने की कोशिश करेंगे या नुकसान पहुंचाने का तो वे आप से वह दूर चले जाएंगे। आज तस्वीर यह है कि मैं बगल में बैठा रहता हूं गौरैया आती है दाना खाती। तोता आता है और वह भी पानी पीता है दाना खाता है। तमाम पक्षी जो मेरे घर आते हैं मुझे दोस्त समझते हैं। मैं भी एक दोस्त की तरह उनका ख्याल रखता हूं। 24 घंटे दाना पानी की व्यवस्था कर दिया हूँ। पक्षी बहुत ही समझदार होते हैं। वे जानते हैं कि कौन आपका दोस्त है और कौन आपका दुश्मन। अगर थोड़ा सा भी उन्हें लग जाएगा कि आप उन्हें उनका नुकसान पहुंचा रहे हैं तो आपसे दूर चले जाएंगे। नहीं तो तोता और कौआ दोनों में हाथ से बिस्किट नहीं खाते। गिलहरी से ऐसी दोस्ती हो गयी है कि क्या बताएं सुबह, दोपहर शाम वह खाना मांगने आती हैं। बिस्कुट, ब्रेड, मूंगफली आदि हाथ से खाती है।

2007 से मैं गौरैया संरक्षण के लिए काम कर रहा हूं। पहले मैं नहीं जानता था कि गौरैया विलुप्ति की ओर है। जब मैंने सोशल मीडिया पर गौरैया की तस्वीर पोस्ट करने लगा तो, कई लोगों ने बताया कि यह तो दिखती ही नहीं। सच भी था पटना में मेरे घर के आसपास बहुत सारी थी वही दूसरे मोहल्ले में एक भी नहीं। हैरान करने वाली बात थी मैं खुश था कि मेरे यहाँ है। फिर इसके संरक्षण का ख्याल आया। दाना -पानी और प्यार की वजह से मेरे यहाँ आ रही है यह मैं समझ गया था। इसके संरक्षण की पहल तब से मैंने शुरू कर दी। अपने घर आंगन से रूठ चुकी गौरैया को बुलाने और संरक्षण का ख्याल मन में आया तो इसे और लोगों से जोड़ने की ठानी। इंसान तो एक दूसरे से खाना-पानी मांग सकता है लेकिन नन्हीं सी चिड़िया किससे मांगे? दाना-पानी और बॉक्स लगाने से गौरैया के साथ-साथ दूसरी चिड़िया भी आने लगीं। एक घर में दहियर यानि इंडियन राबिन के चार- चार की संख्या में चार बार बच्चे हुए। तो वहीं मैना, गौरैया और गिलहरी के भी। यह सिलसिला जारी है। माना जाता है गौरैया विलुप्ति के कगार पर है। आंकडे बताते हैं कि विश्व भर में घर-आंगन में चहकने - फूदकने वाली गौरैया की आबादी में 60 से 80 फीसदी तक की कमी आई है। ब्रिटेन की 'रॉयल सोसायटी ऑफ प्रोटेक्शन ऑफ बर्डस' ने भारत से लेकर विश्व के विभिन्न हिस्सों में अनुसंधानकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययनों के आधार पर गौरैया को 'रेड लिस्ट' में डाला था। वहीँ, आंध्र विश्वविद्यालय द्वारा किए गए अध्ययन के मुताबिक गौरैया की आबादी में करीब 60 फीसदी की कमी आई है। यह ह्रास ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में हुआ है। पश्चिमी देशों में हुए अध्ययनों के अनुसार गौरैया की आबादी घटकर खतरनाक स्तर तक पहुंच गई है। लेकिन, स्टेट ऑफ इंडियनस बड्र्स 2020, रेंज, ट्रेंड्स और कंजर्वेशन स्टेट्स की रिपोर्ट के मुताबिक पिछले 25 साल से गौरैया की संख्या भारत में स्थिर बनी हुई है। हालांकि देश के छह मेट्रो बेंगलुरु, चेन्नई, दिल्ली, हैदराबाद, कोलकाता और मुंबई में इनकी संख्या में कमी देखी गई है। लेकिन बाकी के शहरों में इसकी संख्या स्थिर देखी जा रही है। ऐसे में कहा जा सकता हैं कि भारत में यह विलुप्त नहीं है। लेकिन स्थिति ठीक भी नहीं है। इसके संरक्षण के प्रति जागरूकता को लेकर दिल्ली और बिहार सरकार ने गौरैया को राजकीय पक्षी घोषित कर रखा है। गौरैया की संख्या में कमी के पीछे के कारणों में आहार की कमी, बढ़ता आवासीय संकट, कीटनाशक का व्यापक प्रयोग, जीवनशैली में बदलाव, प्रदूषण और मोबाइल फोन टावर से निकलने वाले रेडिएशन को दोषी बताया जाता रहा हैं। गौरैया अपने बच्चे को शुरुआत में कीड़ा खिलाती है यह कीड़ा उसे खेत-खलिहान-बाग-बगीचा और गाय के गोबर के पास से मिलता है। फसल और साग-सब्जी में बेतहाशा कीटनाशक के प्रयोग ने कीड़ों को मार डाला है। ऐसे में गौरैया अपने बच्चे को पालने के दौरान समुचित आहार यानि प्रोटीन नहीं दे पाती हैं और बच्चे कमजोर हो जाते हैं। गौरैया के प्रजनन के लिए अनुकूल आवास में कमी भी इसकी संख्या में कमी का एक कारण माना जा रहा है। आवासों का तेजी से कंक्रीट के जंगलों में तब्दील होने से तस्वीर बदल गयी है। शहरों में इनके प्रजनन के लिए अनुकूल आवास नहीं के बराबर है। गौरैया संरक्षण में जुड़े लोग कृत्रिम घर बना कर गौरैया को प्रजनन के लिए आवास देने कि पहल चला रहे हैं। इसमें गौरैया अंडे देने के लिए आ भी रही है। कई गाँव में यह संकट ज्यादा नहीं है, फूस और मिट्टी के अवास अभी भी हैं। हाउस स्परौ यानि घरेलू गौरैया इंसानों के घरों में या आस पास रहती है। अंडे देने के लिए घरों के अंदर जगह खोज लेती है लेकिन आधुनिक जीवन शैली के तहत घरों के पैक हो जाने से घर के अंदर प्रवेश नहीं कर पाती है और फिर अंडे देने के लिए इसे भटकना पड़ता है। ऐसे में हर कोई पहल करें और अपने आसपास रहने वाली गौरैया का ख्याल रखे तो इसे बचाया जा सकता है साथ ही दूसरी चिड़ियों को भी। क्योंकि कहीं काही से कौआ और मैना भी गायब हो चुकी हैं। मैं लगातार लोगों को जागरूक करने की कोशिश करता हूँ उन्हे गौरैया की ओर से याद दिलाता हूँ कि, अभी मैं जिंदा हूँ...मुझे बचा लो। रोज दाना -पानी रखे और आवासीय संकट से उबरने के लिए पेड़ और बॉक्स लगाएँ।

इन बेजुबानों को बचाने के लिए जहां तक चैलेंज का सवाल है तो इसमें सबसे महत्वपूर्ण यह है कि पहले मैं जब दाने को रेलिंग पर डाल देता था तो कबूतर आकर उसे पूरा चट कर जाता था और गौरैया ताकती रह जाती थी। बाद में मैंने कई दाना बॉक्स में दाना को रखने लगा, इससे यह हुआ कि सब खा लेते हैं। सबसे बड़ा चैलेंज उस वक्त होता है जब गौरैया के बच्चे घोंसले से निकल कर खुले आसमान में आते हैं। छोटे-छोटे बच्चे जब दाना पानी के लिए आते हैं तब कौआ उन पर हमला करने की फिराक में रहता है। कई दफा मेरे सामने गौरैया के बच्चे को हो पकड़ कर उसे मारकर खा चुका है। लेकिन इस इकोसिस्टम में हम कुछ भी नहीं कर सकते। हां, कोशिश रहती है कि उस पर नजर बनाए रखने की। एक बार गुलमोहर के पेड़ पर एक कौवे ने एक बच्चे को पकड़ लिया। मैंने पत्थर मारा तो कौआ की पकड़ से बच्चा छूट गया और उड़ कर छिप गया। इससे उसकी जान तो बच गई। लेकिन यह इकोसिस्टम का हिस्सा है। आप हम कुछ भी नहीं कर सकते। कौआ को भी आहार चाहिए और गौरैया को भी जीवन। हम कोशिश करें उन्हें सुरक्षा प्रदान करने के लिये।

रोजाना फोटो खींच कर सोशल मीडिया ट्विटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम पर पोस्ट करते हुए लोगों से अपने-अपने घरों में दाना-पानी रखने की अपील रोज करता हूँ। फायदा भी हुआ। हजारों लोगों का फीडबैक मिला। लोगों ने बताया कि उन्होंने पहल की और पहल से उनके यहां गौरैया के साथ -साथ दूसरी चिड़िया भी दाना-पानी के चक्कर में आने लगी। गौरैया संरक्षण के लिए मैंने सोशल मीडिया के साथ प्रिंट और इलेक्टोनिक मीडिया का सहारा लिया। गौरैया संरक्षण पर छोटी-बड़ी बातें बनाते लगा।कोरोना काल में वेबिननार का सहारा लिया। साथ ही गौरैया संरक्षण की पहल फेसबुक पर 'हमारी गौरैया' नाम से पेज और "सेव स्पैरो" ऐप भी बना कर लोगों को जोड़ने का प्रयास जारी है। गौरैया संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करना, गौरैया की खीची तस्वीरों की फोटो प्रदर्शनी लगाना अभियान का हिस्सा है, जो आज भी जारी है। सालों के अनुभव को पुस्तक 'अभी मैं जिंदा हूँ .गौरैया' में पियोया ताकि जागरूकता अभियान को और बल मिले। पर्यावरण योद्धा के निशांत रंजन और उनकी टीम का साथ मिला, जो निःशुल्क देश भर में घोंसला देते हैं। बच्चों और आम लोगों पर खास प्रभाव पड़ा। कई सफलता की कहानियां हैं। जो मुहिम गौरैया संरक्षण के लिये 'दाना-पानी और थोड़ा सा प्यार' मैंने शुरू की थी वह श्रृंखला बनती गयी, लोग जुड़ते चले गये। यह आसन नहीं था। सालों का प्रयास रहा। सोशल मीडिया पर चले अभियान ने रंग दिखाना शुरू किया। यह अभियान सिर्फ पटना तक नहीं रहा, बल्कि देश के विभिन्न हिस्सों तक पहुंचा। लोग जुड़ते गए। जागरूकता का कारवां को बढ़ता गया। आज हर कोई गौरैया को बचना चाहता हैं। गौरैया बच्चों की दोस्त है। एक वक्त हुआ करता था जब हर घर-आँगन में सूप से अनाज फटका जाता था तो फटकने के बाद गिरे अनाज को खाने, गौरैया फुर्र से आती थी और दाना खा कर फुर्र से उड़ जाती थी। बच्चें बचपन में इस पकड़ने की कोशिश करते हुए खेला करते थे। टोकरी के नीचे चावल रख इसे फंसाते और पकड़ने के बाद गौरैया पर रंग डाल कर उड़ा देते थे। जब दूबारा वह आती थी, तो उसे पहचान कर मेरी गौरैया.. मेरी गौरैया कह चहकते और खुश होकर ताली बचा कर उसका स्वागत करते थे। कुछ लोग दाना-पानी इसलिये नहीं रखते कि जब ये आती है तो इसके साथ कबूतर आदि चिड़ियां भी आने लगती हैं और दाना-पानी के चक्कर में वे बालकनी- रेलिंग-छत यानी जहां यह दाना-पानी रखा जाता है उस जगह को गंदा कर देती हैं। कई लोग गिले कपड़े को सूखने डालते हैं तो चिड़ियाँ कपड़ों पर बैठ जाती है और पॉटी कर देती हैं। यह लोगों को पसंद नहीं है। देखा जाए तो लोगों के जीवन में काफी बदलाव भी आया है। बहुमंजली इमारत हो या आम भवन, खुले हिस्से या बालकोनी को लोग शीशे से पैक करवा देते हैं। यह खतरनाक होता है गौरैया उड़ते हुये आती है और शीशे से टकरा जाती है। या फिर उसमें अपनी परछाई देख उस पर चोंच मारती है उसे लगता है वहाँ दूसरी गौरैया है और ऐसे में वह घायल हो जाती है। ऐसे में बच्चे आगे आ सकते हैं और अपने माता -पिता को समझा कर गौरैया को बचाने की पहल कर सकते हैं।

प्रकृति की सभी रचनाएं कहीं न कहीं प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से एक-दूसरे पर निर्भर हैं और हम भी उनमें शामिल हैं। इसलिए इसे बचाना हमारा दायित्व है। यह केवल प्रकृति के लिए ही आवश्यक नहीं है बल्कि इंसान के लिए भी आवश्यक है। गौरैया इंसान को तनाव मुक्त बनाती है और जीने का राह दिखाती है।अगर मैं यह कहूँ कि इस प्रेरणादायी काम को करने के लिए गौरैया ने ही मुझे मोटिवेट किया तो गलत नहीं होगा। खुद गौरैया ने ही मुझे मोटिवेट किया अपनी ओर खींचा और अपने बारे में विस्तृत जानकारी दी। वैसे कई मित्रों से मदद मिली जैसे वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया के प्रमुख संरक्षक डॉ समीर कुमार सिन्हा, गरुण संरक्षक अरविंद मिश्रा, डॉल्फिन विशेषज्ञ डॉक्टर गोपाल शर्मा, सुदन सहाय, दिनश कुमार सहित कई नाम है जिन्होंने मुझे मोटिवेट किया। काम को आगे ले जाने के लिए प्रेरित किया।

गौरैया संरक्षण के लिए हमने जो मुहिम चलाई बस में लोगों को जागरूक करना सबसे पहला कदम है और चिड़ियों के लिए दाना- पानी और थोड़ा सा प्यार देने की अपील की। जिसे मैं बार बार दोहराना चाहूँगा। बच्चों और लोगों से अपील है कि वे अपने-अपने घरों में जहां भी जगह हो चिड़ियों के लिये दाना पानी रखें तथा बॉक्स लगाये। एक न एक दिन गौरैया सहित दूसरी चिड़ियां आयेगी। साथ ही घर के आगे पीछे के खाली जमीन पर पेड़ लगाये। खासकर झुरमुठ वाले पेड़। जैसे समी, मालती, चांदनी आदि के छोटे पेड़ो पर गौरैया आती है। बच्चों से यह भी अपील है कि वे चिड़ियों से प्यार करें। अज्ञानता में पशु- पक्षियों को पत्थर मारते हैं। चिड़ियों को पिंजड़े में कैद कर पालते हैं। ऐसा नहीं करना चाहिए पक्षियों को भी आजादी चाहिए। खुला आसमान चाहिये। क्योंकि इस पृथ्वी पर सबको जीने का हक है।

"संजय जी एक प्रेरणा हैं और उनकी किताबें, पहल और गौरैया के प्रति समर्पण अद्भुत है। हम उनकी कहानियों को प्रदर्शित करना चाहते हैं और पारिस्थितिकी तंत्र के भागीदारों को भारत को गौरैया के लिए सबसे अच्छी जगह बनाने के लिए हाथ मिलाने के लिए आमंत्रित करना चाहते हैं। केवल समर्थन और देखभाल ही गौरैया को आमंत्रित करने का तरीका है हमारे पवित्र घर में।"

- डॉ. अंकुर शरण,
ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ एनजीओ के सह संस्थापक और प्रबंधन ट्रस्टी

यदि आप पक्षियों को बचाने और उनका समर्थन करने के लिए काम कर रहे हैं, तो हमें Indiangreenbuddy@gmail.com पर लिखें और हमारे सेवस्पैरो अभियान का हिस्सा बनें।

मातृत्व दिवस विशेष : उस माँ के लिए मैं क्या लिखूं जिसने ख़ुद मुझे लिखा हैं : डॉ उमेश शर्मा

- जब भी कागज़ पर लिखा मैंने माँ का नाम, क़लम अदब से बोल उठी हो गये चारों धाम : डॉ उमेश शर्मा
- मां के प्यार, त्याग और तपस्या का कर्ज कभी चुकाया नहीं जा सकता : डॉ उमेश शर्मा
- मातृ दिवस पर हर माँ के चरणों में नमन, वंदन व अभिनंदन : डॉ उमेश शर्मा

आगरा। भारत में हर साल मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे के रूप में मनाया जाता है। इस साल यह 12 मई को पड़ रहा है। यह दिन दुनियाभर की माताओं को समर्पित है। इस दिन लोग अपनी मां को गिफ्ट्स फूल कार्ड आदि देकर अपना प्यार जताते हैं। यह दिन मां के प्यार, समर्पण, त्याग और सहयोग के लिए उन्हें थैंक्स कहने का दिन है। मदर्स डे मनाने की शुरुआत अमेरिका की ऐना एम जॉविस को जाता है। दुनिया के अलग-अलग देशों में इसे अलग-अलग दिनों में मनाया जाता है और कई देशों में तो इस दिन छुट्टी भी होती है। यूरोप और ब्रिटेन में तो एक खास रविवार को माताओं को सम्मानित करने की भी परंपरा है, जिसे मदरिंग संडे कहा जाता है।

इस अवसर पर डॉ उमेश शर्मा ने सभी को मातृत्व दिवस की ह्रदय से हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए पत्रकार वार्ता में बताया कि उस माँ के लिए मैं क्या बोलू जिसने ख़ुद मुझे लिखा हैं। जब भी कागज़ पर लिखा मैंने माँ का नाम, क़लम अदब से बोल उठी हो गये चारों धाम क्योकि मां के प्यार, त्याग और तपस्या का कर्ज कभी चुकाया नहीं जा सकता। मातृ दिवस पर हर माँ के चरणों में नमन, वंदन व अभिनंदन। जब-जब मां की याद आती है तब तब उसका अपनापन और निस्वार्थ सेवा भाव स्वयं ही जुबान पर आ ही जाता है। मां का जीवन ऐसा है वह अपने बच्चों के लिए ताउम्र ममता न्योछावर करती रहती है। सही मायने में आज संसार मां की ममता पर ही आकर टिका हुआ है। सदियों से हर युग में मां की महिमा का बखान हुआ है और ऐसे में मदर्स डे मां के सम्मान का एक और दिन महज है। हालांकि, इस दिन का काफी महत्व भी है और लोग इस खास दिन को अपनी मां के प्रति अपने प्यार को शब्दों में बयां करते हैं।यह पूरा दिन मां के नाम समर्पित करें और घर के सभी लोग इस दिन को जश्न के तौर पर मनाएं। फिर चाहे उसे ऑफिस और घर दोनों जगह में संतुलन क्यों न बैठना पड़ा हो, मां ने कभी भी अपनी जिम्मेदारियों से मुंह नहीं मोड़ा है। इस मदर्स डे के खास मौके पर अपनी मां के साथ समय बिताएं, वो सब करें जो व्यस्त होने के कारण आप नहीं कर पाते और मां को खास तोहफे देकर जरूर खुश करें। मां जैसा प्यार इस दुनिया में और कोई नहीं कर सकता। हम मां को कितना भी प्यार और सम्मान कर लें लेकिन वो कम ही पड़ जाता है। मां के प्यार, त्याग और तपस्या के बदले व्यक्ति उसे कुछ नहीं लौटा सकता। हर इंसान की जिंदगी में मां सबसे अहम होती है। मां हमारी हर जरूरतों से लेकर छोटी-बड़ी खुशियों का ख्याल रखती है और बदले में कभी कुछ नहीं मांगती। इसलिए हम लोगों को भी अपनी मां को हर दिन ही खास महसूस कराना चाहिए।

उन्होंने कहा इसको मनाने के पीछे लोगों के जज़्बात और अपनी मां के लिए उनका प्यार पहले की तरह ही रहेगा। वैसे तो हम में से कई लोग हमेशा की तरह इस मदर्स डे को भी अपनी मां के लिए खास बनाये क्योकि मां अपनी पूरी जिंदगी दूसरों की ख्वाहिशों को पूरा करने में निकाल देती है लेकिन हम कभी मां को उनके प्यार और ममता के लिए थैंक्स नहीं कह पाते हैं। मदर्स डे का दिन मां को थैंक्यू कहने के लिए सबसे बेस्ट है। आज बात भी मां के प्यार और ममता को लेकर होगी। सदियां बदल गई, जमाना बदल गया या कहें पिछले कुछ वर्षों में संसार ही बदल गया। केवल मां का ही समर्पण और ममता में कोई बदलाव नहीं आया है। मां का प्यार सागर से गहरा और आसमान से ऊंचा होता है जिसे मापना, तौलना मुमकिन नहीं। हम खुशनसीब हैं कि हमें वो प्यार मिल रहा है। ऐसे में मां के प्रति अपनी भावनाओं को छिपाने की बजाय खुलकर बताने का ही तो दिन है मदर्स डे। मदर्स डे मां के सम्मान में मनाया जाता है। यह दिन बच्चों के लिए खास होता है क्योंकि वह अपनी मां को बताते हैं कि वो उनसे कितना प्यार करते हैं। कई बार व्यस्त रहने के कारण तो कभी किसी और वजह से लोग अपनी मां से अपनी जिंदगी में उनके मायने नहीं बता पाते हैं। मां नाम जुबान पर आते हैं मन और मतिष्क में मातृत्व और करुणा से भरा वो चेहरा नजरों के सामने आ जाता है जिसे हम सब मां कहते हैं। लोग इस दिन को पूरी तरह अपनी मां को समर्पित करते हैं। कहते हैं न कि मां के प्यार का कर्ज चुकाया नहीं जा सकता। हमें इस दुनिया में लाने वाली और इंसान बनाने वाली उस मां के प्रति सम्मान और प्यार जताने के लिए वैसे तो किसी विशेष दिन की जरूरत नहीं, लेकिन मदर्स डे हमें अपनी भावनाओं को जाहिर करने का एक बहाना जरूर देता है। मां का सभी के जीवन में योगदान अतुलनीय है। मां के प्यार, त्याग और तपस्या का कर्ज कभी चुकाया नहीं जा सकता। मातृ दिवस पर हर माँ के चरणों में नमन, वंदन व अभिनंदन।

संस्कारशाला : जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा!

जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा, एकदम जर्जर बूढ़ा, तब तू क्या थोड़ा मेरे पास रहेगा? मुझ पर थोड़ा धीरज तो रखेगा न? मान ले, तेरे महँगे काँच का बर्तन मेरे हाथ से अचानक गिर जाए या फिर मैं सब्ज़ी की कटोरी उलट दूँ टेबल पर, मैं तब बहुत अच्छे से नहीं देख सकूँगा न! मुझे तू चिल्लाकर डाँटना मत प्लीज़! बूढ़े लोग सब समय ख़ुद को उपेक्षित महसूस करते रहते हैं, तुझे नहीं पता?

एक दिन मुझे कान से सुनाई देना बंद हो जाएगा, एक बार में मुझे समझ में नहीं आएगा कि तू क्या कह रहा है, लेकिन इसलिए तू मुझे बहरा मत कहना! ज़रूरत पड़े तो कष्ट उठाकर एक बार फिर से वह बात कह देना या फिर लिख ही देना काग़ज़ पर। मुझे माफ़ कर देना, मैं तो प्राकृति के नियम से बुढ़ा गया हूँ, मैं क्या करूँ बता?

और जब मेरे घुटने काँपने लगेंगे, दोनों पैर इस शरीर का वज़न उठाने से इनकार कर देंगे, तू थोड़ा-सा धीरज रखकर मुझे उठ खड़ा होने में मदद नहीं करेगा, बोल? जिस तरह तूने मेरे पैरों के पंजों पर खड़ा होकर पहली बार चलना सीखा था, उसी तरह?

कभी-कभी टूटे रेकॉर्ड प्लेयर की तरह मैं बकबक करता रहूँगा, तू थोड़ा कष्ट करके सुनना। मेरी खिल्ली मत उड़ाना प्लीज़। मेरी बकबक से बेचैन मत हो जाना। तुझे याद है, बचपन में तू एक गुब्बारे के लिए मेरे कान के पास कितनी देर तक भुनभुन करता रहता था, जब तक मैं तुझे वह ख़रीद न देता था, याद आ रहा है तुझे?

हो सके तो मेरे शरीर की गंध को भी माफ़ कर देना। मेरी देह में बुढ़ापे की गंध पैदा हो रही है। तब नहाने के लिए मुझसे ज़बर्दस्ती मत करना। मेरा शरीर उस समय बहुत कमज़ोर हो जाएगा, ज़रा-सा पानी लगते ही ठंड लग जाएगी। मुझे देखकर नाक मत सिकोड़ना प्लीज़! तुझे याद है, मैं तेरे पीछे दौड़ता रहता था क्योंकि तू नहाना नहीं चाहता था? तू विश्वास कर, बुड्ढों को ऐसा ही होता है। हो सकता है एक दिन तुझे यह समझ में आए, हो सकता है, एक दिन!

तेरे पास अगर समय रहे, हम लोग साथ में गप्पें लड़ाएँगे, ठीक है? भले ही कुछेक पल के लिए क्यों न हो। मैं तो दिन भर अकेला ही रहता हूँ, अकेले-अकेले मेरा समय नहीं कटता। मुझे पता है, तू अपने कामों में बहुत व्यस्त रहेगा, मेरी बुढ़ा गई बातें तुझे सुनने में अच्छी न भी लगें तो भी थोड़ा मेरे पास रहना। तुझे याद है, मैं कितनी ही बार तेरी छोटे गुड्डे की बातें सुना करता था, सुनता ही जाता था और तू बोलता ही रहता था, बोलता ही रहता था। मैं भी तुझे कितनी ही कहानियाँ सुनाया करता था, तुझे याद है?

एक दिन आएगा जब बिस्तर पर पड़ा रहूँगा, तब तू मेरी थोड़ी देखभाल करेगा? मुझे माफ़ कर देना यदि ग़लती से मैं बिस्तर गीला कर दूँ, अगर चादर गंदी कर दूँ, मेरे अंतिम समय में मुझे छोड़कर दूर मत रहना, प्लीज़!

जब समय हो जाएगा, मेरा हाथ तू अपनी मुट्ठी में भर लेना। मुझे थोड़ी हिम्मत देना ताकि मैं निर्भय होकर मृत्यु का आलिंगन कर सकूँ। चिंता मत करना, जब मुझे मेरे सृष्टा दिखाई दे जाएँगे, उनके कानों में फुसफुसाकर कहूँगा कि वे तेरा कल्याण करें। तुझे हर अमंगल से बचायें। कारण कि तू मुझसे प्यार करता था, मेरे बुढ़ापे के समय तूने मेरी देखभाल की थी।

मैं तुझसे बहुत-बहुत प्यार करता हूँ रे, तू ख़ूब अच्छे-से रहना। इसके अलावा और क्या कह सकता हूँ, क्या दे सकता हूँ भला।

सर्वोच्च न्यायालय ने दिखाई अपनी सर्वोच्च ताकत

*केजरीवाल को अंतरिम जमानत देने के साथ बनाया एक नया अधिनियम, **"राजनीति से जुड़े लोगों की अग्रिम जमानत के लिए सिर्फ राजनीतिक होना ही बहुत"** यानी बुजुर्गों से सुनी कहावत हुई चरितार्थ "जिसके हाथ में लाठी उसी की भैंस" ताकतवर और पैसे वालो के लिए नियम/कानून अलग और आम जनता के लिए अलग। अरविन्द केजरीवाल को इलेक्शन के लिए अंतरिम जमानत देने के साथ ही **खोल दिए सभी राजनेताओं, राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए बाहर आने का मार्ग चाहें वह किसी भी बड़े से बड़े अभियोग में क्यों ना लिप्त हो...***

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी। कथित शराब नीति घोटाले में दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल को सुप्रीमकोर्ट ने 1 जून तक की अंतरिम जमानत दे दी है पर शर्तें लागू। हालांकि ईडी के वकील ने आखिरी समय तक केजरीवाल की अंतरिम जमानत का विरोध किया। **ईडी ने बाकायदा जमानत के विरोध में हलफनामा तक दे डाला।** लेकिन इसके बावजूद भी सुप्रीमकोर्ट ने अपनी सुप्रीम पावर के तहत अंतरिम बेल के आदेश दे दिए। कोर्ट ने ईडी से कहा कि जब आप पिछले दो साल से कुछ नहीं कर पाए, तो केजरीवाल 21 दिन में क्या कर लेगे? लेकिन केजरीवाल 21 दिन में 3 राज्य और 4 चरण में सियासी हवा का रूख बदलने का दावा करते हैं। अब केजरीवाल दिल्ली, हरियाणा और पंजाब में होने वाले लोकसभा चुनाव में बेफिक्री और बेखौफ होकर प्रचार कर पाएगे। उल्लेखनीय है कि दिल्ली के मुख्यमंत्री ने चुनाव प्रचार का हवाला देते हुए ही अदालत से अंतरिम जमानत मांगी थी। हालांकि कोर्ट भी उन्हें लेकर सॉफ्ट नजर आ रही थी। **कोर्ट ने पहले ही संकेत दे दिए थे कि केजरीवाल की बेल की राह मुश्किल नहीं है।** अदालत ने साफ-साफ कहा था कि केजरीवाल कोई आदतन अपराधी नहीं है जबकि **ईडी कहती रही कि अगर उनको चुनाव प्रचार के आधार पर जमानत दी गई तो यह अमृतपाल सिंह जैसे के लिए भी रास्ता बन जाएगा। यहां ये बता दें कि अमृतपाल सिंह ने डिबरूगढ आसाम की जेल से ही नॉमिनेशन भर दिया है। अब वह भी चुनाव लड रहा है। जायज बात है कि *इस हिसाब से अमृतपाल भी राहत का हकदार बन गया है।** जबकि ईडी ने केजरीवाल के मामले में कहा था कि **चुनाव प्रचार करना मौलिक अधिकार नहीं है लेकिन इन दलीलों के बावजूद केजरीवाल को सुप्रीमकोर्ट ने बेल दे दी तो इसे क्या समझा जाए।** दरअसल अदालत ईडी के मौलिक अधिकार वाली दलील से सहमत नहीं हुई। उल्लेखनीय है कि **सुप्रीम कोर्ट से मिली राहत को केजरीवाल चुनाव में भुनाने से पीछे नहीं हटेगें। वह अब सहानुभूति वोट पाने की कोशिश करेंगे। बल्कि चुनाव सभाओं में बतौर जेल मुद्दे को भुनाएगें।** दिल्ली में 25 मई को वोटिंग होनी है। हरियाणा में चौथे चरण में चुनाव है। आम आदमी पार्टी कुरूक्षेत्र सीट पर चुनाव लड रही है। वहीं पंजाब में 1 जून को मतदान होना है। चुनाव के 07 चरण पूरे होने के बाद यानि 2 जून को केजरीवाल ने तिहाड जेल में सरेंडर करना है। दिल्ली में छठे चरण में 25 मई को 7 लोकसभा सीटों वोट डाले जाएगें। दिल्ली में कुल 162 कैंडीडेट चुनावी मैदान में डटे हैं। दिल्ली में आप कांग्रेस संग मिलकर चुनाव लड रही है। आप पार्टी 4 सीटों पर जबकि कांग्रेस 3 सीटों पर चुनाव लड रही है। सुप्रीम कोर्ट की तय शर्तो के मुताबिक अरविंद केजरीवाल मुख्य मंत्री कार्यालय और सचिवालय नहीं जाएगे, वहीं जब तक जरूरी ना हो किसी फाइल पर हस्ताक्षर नहीं करेगे। इसके अलावा शराब नीति मामले में अपनी भूमिका पर बयान नहीं देगे।

दिल्ली की सात सीटों पर 162 प्रत्याशी आजमाएंगे किस्मत, 1.52 करोड़ मतदाता करेंगे फैसला

सातों लोकसभा सीटों पर 162 उम्मीदवार अपनी किस्मत आजमाएंगे। इन प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला 1.52 करोड़ मतदाता करेंगे। इस बार बीते लोकसभा चुनाव की तुलना में दो उम्मीदवार कम हैं। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में 164 प्रत्याशी मैदान में थे।

नामांकन वापसी के आखिरी दिन बृहस्पतिवार को चार लोकसभा सीटों पर पांच उम्मीदवारों ने नामांकन वापस ले लिए। ऐसे में सातों लोकसभा सीटों पर 162 उम्मीदवार अपनी किस्मत आजमाएंगे। इन प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला 1.52 करोड़ मतदाता करेंगे। इस बार बीते लोकसभा चुनाव की तुलना में दो उम्मीदवार कम हैं। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में 164 प्रत्याशी मैदान में थे।

नामांकन वापस लेने वालों में चांदनी चौक, पूर्वी दिल्ली, उत्तर पश्चिमी दिल्ली लोकसभा सीट के एक-एक प्रत्याशी हैं, जबकि दक्षिणी दिल्ली सीट से दो प्रत्याशियों ने नामांकन वापस लिया है। कुल 265 उम्मीदवारों ने 367 नामांकन दाखिल किए थे जिसमें से 129 नामांकन रद्द हो गए थे। इस तरह से 238 नामांकन स्वीकृत किए गए थे। निर्वाचन से जुड़े अधिकारियों ने बताया कि इस बार अधिकतर प्रत्याशियों ने एक से अधिक नामांकन दाखिल किए थे। उनके एक ही नामांकन को स्वीकृत किया गया। बीते लोकसभा चुनाव में 221 उम्मीदवारों ने 439 नामांकन पत्र दाखिल किए थे। इनमें से 209 नामांकन रद्द हुए थे, जबकि 9 उम्मीदवारों ने नामांकन वापस लिया था। कई उम्मीदवारों ने एक से अधिक नामांकन दाखिल किए थे।

नामांकन वापस लेने वालों में तीन निर्दलीय

नामांकन वापस लेने वाले पांच उम्मीदवारों में से तीन निर्दलीय हैं, जबकि दो छोटी पार्टियों के उम्मीदवार हैं। इसमें दक्षिणी दिल्ली से जय महा भारत पार्टी से शंकर डे और पूर्वी दिल्ली से जिंदाबाद क्रांति पार्टी से नरेंद्र नंदा भाई राजपूत हैं। वहीं, निर्दलीय उम्मीदवारों में उत्तर पश्चिम लोकसभा सीट से गीता, चांदनी चौक से रमेश और दक्षिणी दिल्ली लोकसभा सीट से राम गोपाल हैं।

हर पोलिंग बूथ पर होगी दो ईवीएम

निर्वाचन से जुड़े अधिकारियों ने बताया कि एक ईवीएम में 16 प्रत्याशियों के ही चुनाव चिह्न हो सकते हैं। इससे अधिक उम्मीदवार होने पर दूसरी ईवीएम रखी जाती है। दिल्ली में हर लोकसभा सीट पर वर्तमान में 16 से अधिक उम्मीदवार हैं। सबसे कम 17 उम्मीदवार नई दिल्ली और सबसे ज्यादा 28 उम्मीदवार उत्तर पूर्वी दिल्ली लोकसभा सीट पर हैं। ऐसे में हर पोलिंग बूथ पर दो ईवीएम रखी जाएंगी।

मतदान केंद्र से घर तक मुफ्त पहुंचाएगी बाइक टैक्सी

लोगों की मतदान केंद्र तक पहुंच बढ़ाने के लिए पहली बार बाइक टैक्सी का इस्तेमाल किया जाएगा। इसके लिए बाइक टैक्सी कंपनी रैपिडो के साथ मुख्य निर्वाचन कार्यालय ने समझौता किया है। कंपनी की ओर से लोगों को मतदान के दिन केंद्र से घर तक मुफ्त यात्रा का विकल्प प्रदान किया जाएगा। निर्वाचन से जुड़े अधिकारियों ने बताया कि इसका उद्देश्य परिवहन बाधाओं को दूर करना और वोट देने के लोकतांत्रिक अधिकार का इस्तेमाल करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करना है।

आवास पर पहुंचते ही केजरीवाल को संजय सिंह ने गोद में उठाया, खूब हुई आतिशबाजी

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सीएम अरविंद केजरीवाल के आवास पहुंचते ही राज्यसभा सांसद संजय सिंह उनके स्वागत में खड़े थे। उन्होंने केजरीवाल को अपनी गोद में उठा लिया। इस दौरान आप के तमाम बड़े नेता जैसे सौरभ भारद्वाज सोमनाथ भारती कैलाश गहलोत भी मौजूद रहे। सभी ने केजरीवाल के गले मिलकर उनका भव्य स्वागत किया। इस दौरान लोगों में खूब उत्साह देखा गया।

नई दिल्ली। दिल्ली की तिहाड़ जेल से रिहा होने के बाद सीएम अरविंद केजरीवाल अपने आवास पहुंचे। इस दौरान आवास को खूबसूरती से सजाया गया था। आवास के बाहर फूलों को बिछाया गया था। कार्यकर्ता जुटे थे और ढोल-नगाड़ों के साथ उनका आवास पर जोरदार स्वागत किया गया। वहीं उनके पहुंचते ही जमकर आतिशबाजी की गई।

जब केजरीवाल अपने आवास पर पहुंचने वाले थे, हजारों कार्यकर्ता पलक-पांवरे बिछाकर उनका इंतजार कर रहे थे। इस दौरान जमकर आतिशबाजी हो रही थी। लोग ढोल-नगाड़ों की थाप पर जमकर थिरक रहे थे। इस दौरान मिठाईयां भी खूब बांटी जा रही थी। जब इंतजार की घड़ियां खत्म हुई और केजरीवाल आवास के दरवाजे पर पहुंचे तो कार्यकर्ताओं में खूब जोश भर गया। इस दौरान जमकर नारेबाजी की गई।

संजय सिंह ने गोद में उठाया

केजरीवाल के आवास पहुंचते ही सांसद संजय सिंह उनके स्वागत में खड़े थे। उन्होंने केजरीवाल को अपनी गोद में उठा लिया। इस दौरान आप के तमाम बड़े नेता जैसे सौरभ भारद्वाज, सोमनाथ भारती, कैलाश गहलोत भी मौजूद रहे। सभी ने केजरीवाल के गले मिलकर उनका भव्य स्वागत किया। इस दौरान लोगों में खूब उत्साह देखा गया।

मां-पिता से मिलकर भावुक हुए केजरीवाल: आवास पर पहुंचते ही केजरीवाल के मां-पिता दरवाजे पर फूल माला लेकर खड़े थे। केजरीवाल ने दोनों के पैर छूए। उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल ने उनको टीका लगाकर स्वागत किया। फिर केजरीवाल को उन्होंने माला पहनाया। इसके बाद केजरीवाल ने अपनी मां को गले लगाकर भावुक हो गए।

देशभर के ईएसआईसी अस्पतालों, डिस्पेंसरियों में कर्मचारियों का तीसरे दिन भी विरोध प्रदर्शन रहा जारी

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी। ऑल इंडिया, ईएसआईसी (मेडिकल) इंप्लाइज फेडरेशन का पूरे देश में स्थित ईएसआईसी अस्पताल प्रशासन की कर्मचारी विरोधी नीतियों के खिलाफ फेडरेशन से संबद्ध यूनियनों ने मिलकर पिछले 3 दिनों से तमाम अस्पतालों में विरोध प्रदर्शन जारी है।

इस विरोध प्रदर्शन में तमाम ऑपरेशन थिएटर, सीएस एसडी, लैबोरेट्रीज, रेडियोग्राफर, एमआरडी, ईसीब, प्लास्टर, ड्रेसर, नर्स ंग अर्दली, किचन, लॉन्ड्री, डेंटल, फिजियोथेरेपिस्ट, आक्यूपेशनल, थेरेपिसट, आप्टोमेट्रिस्ट, एएनएम, और फार्मासिस्ट, विभागों से जुडे हजारों की संख्या में कर्मचरियों ने एकजुट होकर ईएसआईसी प्रशासन के खिलाफ बाजू पर काली पट्टियां बांधकर अपना शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन का मुजेहरा किया। इस बाबत ऑल इंडिया ईएसआईसी मेडिकल इंप्लाइज फेडरेशन के जर्नल सेकेट्री किशन चंद ने बताया कि कर्मचारी अपनी लंबे अर्से से लंबित 18 मांगों के इंतजार में सब्र का बांध टूट गया है। और ईएसआईसी प्रशासन के खिलाफ देशभर के ईएसआईसी अस्पताल में कार्यरत सभी अलाईड हेल्थ एंड केयर प्रोफेशनल्स (पेरामेडिकल स्टाफ) बाजुओं में काली पट्टी बांधकर प्रशासन की कुटिल नीतियों के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि फेडरेशन ने 8 से 11 मई तक विरोध प्रदर्शन का अहवाहन किया है। फेडरेशन के जर्नल सेकेट्री के मुताबिक विरोध प्रदर्शन में शामिल ईएसआईसी अस्पतालों, डिस्पेंसरियों में कार्यरत हेल्थ एंड केयर प्रोफेशनल्स (पेरामेडिकल स्टाफ) जों मरीजों के प्रभावी कामकाज को सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। अपने तौर पर बेहतरीन, गुणवत्ता सेवाए प्रदान करने के लिए समर्पित है। बावजूद इसके पीडित कर्मचारियों की लंबित समस्याओ/ मांगों पर ईएसआईसी प्रशासन कोई ध्यान नहीं दे रहा है। ईएसआईसी प्रशासन के इस तरीके के रवैये से कर्मचारियों की गरिमा को बेहद ठेस पहुंच रही है। जर्नल सेकेट्री किशन चंद ने बताया कि ईएसआईसी प्रशासन पेरामेडिकल स्टाफ की प्रमोशन,, एमएसीपी, पे फिक्सेशन,

स्वयंसेवकशाला चैलेंजर्स ग्रुप: भविष्य को सशक्त बनाना, पथों को रोशन करना

अक्सर प्रतिकूल परिस्थितियों से घिरी दुनिया में, आशा की किरण उभरती है, अदम्य मानवीय भावना का प्रमाण - चैलेंजर्स ग्रुप। बलिदान की राख से जन्मी, सेवा के लोकाचार से पोषित, युवाओं के नेतृत्व वाली इस पहल ने सीमाओं को पार कर समाज पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

उद्देश्य की एक यात्रा:

2017 में स्थापित, चैलेंजर्स ग्रुप की उत्पत्ति राष्ट्रीय दुःख के क्षण में हुई, जब राष्ट्र ने सुकमा में बहादुर सैनिकों की मृत्यु पर शोक व्यक्त किया। जवाब में, उत्साही युवाओं का एक समूह एक साथ आया, और एक प्रतीकात्मक श्रद्धांजलि के रूप में एक पौधा लगाया, और इस प्रकार परिवर्तन के बीज बोये। तब से, समूह की पहुंच नोएडा, दिल्ली, मथुरा, गाजियाबाद, मध्य प्रदेश और बिहार जैसे क्षेत्रों में फैल गई है, जिससे समुदायों में आशा और जीवन शक्ति का संचार हुआ है।

शिक्षा: परिवर्तन का एक प्रतीक:

चैलेंजर्स ग्रुप के दिल में स्थायी परिवर्तन को उत्प्रेरित करने की प्रतिबद्धता है, जिसमें शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभर रही है। 'चैलेंजर्स की पाठशाला' जैसी पहल के माध्यम से, समूह परिवर्तन का अग्रदूत बन गया है, जो 500 से अधिक वंचित बच्चों को मुफ्त शिक्षा, डिजिटल कक्षाएं और पाठ्येतर गतिविधियों की पेशकश कर रहा है। इन प्रयासों ने न केवल बच्चों को शोषण के चंगुल से बचाया है बल्कि उनके भीतर महत्वाकांक्षा और लचीलेपन की लौ भी जलाई है।

उपलब्धियों का जश्न मनाना, सपनों को प्रज्वलित करना:

चैलेंजर्स ग्रुप की यात्रा विजय के मील के पत्थर से सजी है, क्योंकि इसके छात्र प्रेरणा की कहानियों को लिखने के लिए बाधाओं को पार करते हैं। राष्ट्रपति भवन के गलियारों की शोभा बढ़ाने से लेकर श्री सोनू सूद जैसी प्रतिष्ठित हस्तियों द्वारा सम्मानित होने तक, उनकी उपलब्धियों ने न केवल मान्यता के पन्नों को सुशोभित किया है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक सितारों के रूप में भी काम किया है।

मिशन प्रवेश: अवसर के लिए मार्ग प्रशस्त करना:

ऐसे समाज में जहां शिक्षा अक्सर एक दूर का सपना है, चैलेंजर्स ग्रुप बदलाव के अग्रदूत के रूप में उभरा है, जिसने 300 से अधिक बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा में प्रवेश की सुविधा प्रदान की है। अकेले इस वर्ष, समूह ने ज्ञान के प्रकाश से हर पथ को रोशन करने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए, 42 और बच्चों को शिक्षा के पवित्र हॉल में प्रवेश कराया है।

चैलेंजर्स की पाठशाला ऑन व्हील्स: क्षितिज से परे तक पहुँचना:

भौगोलिक बाधाओं से प्रभावित हुए बिना, चैलेंजर्स ग्रुप ने अपने अभिनव 'पाठशाला ऑन व्हील्स' कार्यक्रम का अनावरण किया है, जो वंचितों के दरवाजे तक शिक्षा का उपहार लेकर आया है। डिजिटल स्क्रीन और शैक्षिक संसाधनों से सुसज्जित एक मोबाइल कक्षा के साथ, इस पहल का उद्देश्य डिजिटल विभाजन को पाटना है, यह सुनिश्चित करना कि कोई भी बच्चा ज्ञान की खोज में पीछे न रह जाए।

अक्सर निराशा के साये से घिरी दुनिया में, चैलेंजर्स ग्रुप सामूहिक कार्रवाई की शक्ति, मानवीय भावना और शिक्षा की परिवर्तनकारी क्षमता के प्रमाण के रूप में खड़ा है। जैसे-जैसे यह सेवा के अपने पथ पर आगे बढ़ता है, समूह एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य करता है, भविष्य को रोशन करता है और हर उस कोने में सपनों को प्रज्वलित करता है जिसे वह छूता है।

ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ एनजीओ के सह संस्थापक और प्रबंधन ट्रस्टी डॉ. अंकुर शरण की एक पहल, जो स्वयंसेवकशाला (वालंटियरशाला) अभियान के माध्यम से स्वयंसेवकों को सशक्त बनाने के लिए विभिन्न प्लेटफार्मों और पहलों के माध्यम से वास्तविक चेंजमेकर्स की कहानी साझा कर रहे हैं, यदि आप हमारे पारिस्थितिकी तंत्र भागीदारों की किसी भी पहल को पसंद करते हैं - तो जुड़ें, स्वयंसेवक बनने में मदद करें और हम जितना संभव हो उतना समर्थन करें।

indiangreenbuddy@gmail.com

सफदरजंग अस्पताल में मदर एनआईसीयू, बीमार नवजात की देखभाल में आदर्श बदलाव

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। देश भर में नवजात शिशुओं की देखभाल और उपचार के स्तर में सुधार लाने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। परंपरागत रूप से, सरकारी और निजी दोनों अस्पतालों में नवजात गहन देखभाल इकाइयों (एनआईसीयू) में बीमार जन्मजात शिशुओं (उसी अस्पताल में जन्म लेने वाले शिशुओं) को विशेष नवजात देखभाल प्रदान करना एक आदर्श रहा है। गंभीर रूप से बीमार शिशुओं को इनक्यूबेटर वार्मर, वेंटिलेटर से सुसज्जित अत्याधुनिक नर्सरियों में पाला जाता है और नवजात शिशुओं और प्रशिक्षित नर्सिंग स्टाफ जैसे कुशल कर्मियों द्वारा नियुक्त किया जाता है। जबकि माताओं को प्रसवोत्तर वार्डों में व्यापक प्रसवोत्तर देखभाल और निगरानी मिलती है जब तक कि उनके बच्चों को छुट्टी नहीं मिल जाती या उन्हें पहले ही छुट्टी दे दी जाती है। वे प्रसवोत्तर वार्डों या अपने घर से स्तन का दूध पिलाने और कंगारू मातृ देखभाल प्रदान करने के लिए बीच-बीच में एनआईसीयू में जाती हैं।

अन्य अस्पतालों या स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं से रेफर किए गए नवजात शिशुओं, जिन्हें बाह्य नवजात शिशु के रूप में जाना जाता है, के लिए एक स्पष्ट विरोधाभास मौजूद है, जिन्हें आमतौर पर सामान्य बाल चिकित्सा वार्डों में भर्ती किया जाता है। उनकी माताओं को, जो अभी भी नाजुक प्रारंभिक प्रसवोत्तर अवधि में हैं, या तो घर भेज दिया जाता है या इस महत्वपूर्ण समय में इष्टतम आराम और स्वास्थ्य लाभ सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक किसी विशेष सुविधा के बिना अपने छोटे बच्चों के साथ बिस्तर पर रहने के लिए असुविधाजनक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। यह भी सच है कि बाह्य नवजात शिशुओं में मृत्यु दर अधिक होती है, जो कि जन्मजात नवजात शिशुओं में 10% -12% की तुलना में 20% से 30% तक होती है।

WHO द्वारा वित्त पोषित बहु केंद्रित यादृच्छिक नियंत्रण परीक्षण 5 देशों में आयोजित किया गया था, जिसमें 1-1.8 किलोग्राम के बीच कम वजन वाले शिशुओं के परिणामों पर तत्काल कंगारू मदर केयर (iKMC) के प्रभावों का अध्ययन करने के लिए सफदरजंग अस्पताल भारत में परीक्षण स्थल था। इस अध्ययन के दौरान एक माँ नवजात शिशु देखभाल इकाई बनाई गई जहाँ माँ का बिस्तर उसके बच्चे के बिस्तर के बगल में था और वह NICU में 24*7 रहती थी। अध्ययन ने स्पष्ट रूप से हाइपोथर्मिया और सेप्सिस की कम दर के अलावा, केएमसी समूह में 25% जीवित रहने का लाभ दिखाया। यह अध्ययन एक गेम चेंजर था और एनआईसीयू में रहने के दौरान नवजात और बाहरी दोनों शिशुओं के लिए माँ और बच्चे के रक्त को अलग करने की सदियों पुरानी पारंपरिक चिकित्सा पद्धति को चुनौती दी। डब्ल्यूएचओ ने 2022 में एक ऐतिहासिक दिशानिर्देश जारी कर देखभाल के मानक के रूप में 2500 ग्राम से कम वजन वाले सभी शिशुओं में केएमसी को जल्द से जल्द लागू करने की सिफारिश की। उपरोक्त के अनुरूप, कम वजन वाले शिशुओं के लिए हाल ही में MOHFW दिशानिर्देशों में समान सिफारिशें अपनाई गईं।

इस अध्ययन से प्रेरणा लेते हुए, MOHFW के तत्वावधान में और डॉ. वंदना तलवार चिकित्सा अधीक्षक के सहयोग से, विशेष रूप से नवजात शिशुओं के लिए 15 बिस्तरों वाले मातृ-नवजात आईसीयू (MNICU) का उद्घाटन 5 अगस्त को आईसीएमआर के महानिदेशक डॉ. राजीव बहल द्वारा किया गया।

साया गोल्ड एवेन्यू में 2 साल से खराब थे 600 से ज्यादा RO के सेडिमेंट, लोगों के बीमार होने पर जागा बिल्डर

गाजियाबाद की साया गोल्ड एवेन्यू सोसायटी के फ्लैटों में लगे 600 से ज्यादा आरओ में लगे सेडिमेंट लगभग दो वर्ष से खराब थे। जिस वजह से लोगों को पानी में धूल मिट्टी और गंदगी मिल रही थी। सोसायटी के लोगों ने कहा कि बिल्डर ने उन्हें आरओ लगवाकर दिए थे। आरओ के सेडिमेंट अधिकतम एक वर्ष में जरूर बदलना चाहिए।

परिवहन विशेष न्यूज

साहिबाबाद। साया गोल्ड एवेन्यू सोसायटी के फ्लैटों में लगे 600 से ज्यादा आरओ में लगे सेडिमेंट दो वर्ष से खराब थे। जिस वजह से लोगों को पानी में धूल, मिट्टी और गंदगी मिल रही थी। ये आरओ बिल्डर ने लगवाए थे। लोगों के बीमार होने पर बिल्डर आरओ के सेडिमेंट बदलवाए हैं, लेकिन कुछ फ्लैटों में अभी भी सेडिमेंट नहीं बदले गए हैं।

सोसायटी के लोगों ने कहा कि बिल्डर ने उन्हें आरओ लगवाकर दिए थे। आरओ के सेडिमेंट अधिकतम एक वर्ष में जरूर बदलना चाहिए। एक वर्ष बाद काम करना कम बंद कर देता है। सेडिमेंट का काम पानी से गंदगी, और धूल व मिट्टी को अगल करना होता है। जब सेडिमेंट बदले गए तो वह बहुत खराब निकले।

वहीं कुछ आरओ के खराब हो चुके कार्बन फिल्टर भी बदले गए हैं। सोसायटी की पल्लवी ने बताया कि सेडिमेंट को बहुत पहले बदलवाना चाहिए था। बिल्डर ने पानी को लेकर प्रत्येक स्तर से लापरवाही की। सोसायटी में वाटर सप्लाई फिल्टर भी खराब था। उसे भी ठीक नहीं कराया गया। वहीं अभी तक वाटर साफ्नर प्लांट भी चालू नहीं हुआ है।

बंद मिला एक सबमर्सिबल

सोसायटी के लोगों का आरोप है कि बेसमेंट की पानी की टंकी को भरने में भी लापरवाही की जा रही थी। बेसमेंट में दो सबमर्सिबल हैं। एक सबमर्सिबल खराब मिला। एक सबमर्सिबल से टंकी भरने में काफी समय लग जाता था। जिस वजह से टंकी खाली करके सफाई करने में लापरवाही की जाती थी। सबमर्सिबल को ठीक कराने काम शुरू कर दिया गया है।

फाल्ट का पुख्ता जानकारी नहीं

पेयजल टंकी में सीवर का पानी मिला कहां से अभी तक इस प्रश्न का जवाब किसी के पास नहीं है। ऐसे में बिल्डर और जीडीए के अधिकारी हवा में तीर चला रहे हैं।

बेसमेंट में पानी की टंकी और ओवर हैड टैंकों की सफाई कर खानापूरी कर दी गई है। मेंटेनेंस के स्टाफ को फाल्ट की पुख्ता जानकारी नहीं होने पर है लोगों में संशय की स्थिति हैं। सोसायटी के निमिश ने बताया कि जब तक फाल्ट का पता नहीं चलती तक लोग इसका पानी नहीं पियेंगे।

माहिरा होम्स के प्रबंध निदेशक को 14 दिन के लिए जेल भेजा, ईडी ने 30 अप्रैल को हरिद्वार से किया था गिरफ्तार

माहिरा होम्स के प्रबंध निदेशक सिकंदर सिंह छौक्कर को जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत ने 14 दिन की न्यायिक हिरासत में बृहस्पतिवार को जेल भेज दिया। ईडी ने पूछताछ के लिए उन्हें अदालत से आठ दिन के रिमांड पर ले रखा था। माहिरा होम्स के प्रबंध निदेशक को ईडी ने 30 अप्रैल को हरिद्वार से गिरफ्तार किया था। पहले पांच दिन की रिमांड मिली थी।

गुरुग्राम। माहिरा होम्स के प्रबंध निदेशक सिकंदर सिंह छौक्कर को जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत ने 14 दिन की न्यायिक हिरासत में बृहस्पतिवार को जेल भेज दिया। ईडी ने पूछताछ के लिए उन्हें अदालत से आठ दिन के रिमांड पर ले रखा था। बृहस्पतिवार को रिमांड की अवधि पूरी होने के बाद उन्हें अदालत में पेश किया गया। मामले की अगली सुनवाई 23 मई को वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से होगी।

गौरतलब है कि माहिरा होम्स के प्रबंध निदेशक को ईडी ने 30 अप्रैल को हरिद्वार से गिरफ्तार किया था। एक अप्रैल को उन्हें जिला एवं सत्र न्यायाधीश सुभाष महला के समक्ष पेश कर पूछताछ के लिए रिमांड पर लिया था। पहले पांच दिन की रिमांड मिली थी।

रिमांड के दौरान कई लोगों के सामने बैठाकर पूछताछ

रिमांड पूरी होने के बाद ईडी ने अदालत में पेश कर दोबारा यह तर्क देते हुए रिमांड मांगा था कि आरोपित जांच में सहयोग नहीं कर रहा है। इस पर तीन दिन की और रिमांड अदालत ने मंजूर कर ली थी। बताया जाता है कि रिमांड के दौरान कई लोगों के सामने बैठाकर पूछताछ की गई है, लेकिन कंपनी कार्यालय से मिले एप्पल के लैपटॉप की आईडी व पासवर्ड के बारे में ईडी जानकारी हासिल नहीं कर सकी।

छौक्कर जांच में पूरा सहयोग कर रहे

जानकारी हासिल करने के लिए ईडी ने तीसरी बार रिमांड की अर्जी दी थी लेकिन आरोपित के अधिवक्ता ने कहा कि लैपटाप छौक्कर का नहीं है। साथ ही छौक्कर जांच में पूरा सहयोग कर रहे हैं। वह गिरफ्तारी से पहले 37 बार ईडी की पूछताछ में शामिल हो चुके हैं। इस आधार पर आरोपित को अदालत ने इस बार रिमांड पर नहीं दिया।

'हम चाहते हैं कि हमारा माल चाइना के युवा खरीदें'; राहुल गांधी ने कांग्रेसियों को बताया बब्बर शेर

कानपुर। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कार्यकर्ताओं को बब्बर शेर बताया। बोले, तीन साल से हम नरेन्द्र मोदी के खिलाफ लड़ रहे हैं। नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान खोली। हमने भारत जोड़ो यात्रा व न्याय यात्रा से बात की। सबको इनकी सच्चाई बताई।

राहुल गांधी ने कहा, 4 जून को नरेन्द्र मोदी हिंदुस्तान के प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे। वो नहीं बन सकते हैं। हमने मेहनत कर दी है। हमारे गठबंधन को उत्तर प्रदेश में 50 सीटें मिलने वाली हैं। मीडिया वाले अदाणी के हैं, इसलिए सच नहीं लिखते।

प्रधानमंत्री कांपते जुबान से लेते हैं नाम

जनसभा को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा, कानपुर की जनता देखो इन्होंने आपके साथ क्या किया। आप मैनचेस्टर कहलाते थे। मुकाबला करते थे। मेड इन कानपुर के सामने मेड इन चाइना कभी नहीं बिक सकता है।

गाजियाबाद में बिजली बिलों की गड़बड़ी से मिलेगी निजात, लगेंगे 11 लाख स्मार्ट मीटर

परिवहन विशेष न्यूज

जिले के सभी उपभोक्ताओं के अभी सामान्य मीटर लगे हुए हैं। इनमें विद्युत निगम उनके मीटर के खाता नंबर से बिल बनाता है। एक से चार किलोवाट के कनेक्शन वाले उपभोक्ताओं के मीटर से मीटर रीडर रीडिंग लेकर एप से बिल बनाता है। बिलों को ठीक करने के नाम पर विद्युतकर्मियों पर रिश्वत लेने समेत विभिन्न आरोप लगते रहते हैं।

गुरुग्राम। बिजली बिलों में गड़बड़ी को लेकर विद्युत निगम में उपभोक्ताओं की लगातार शिकायतें आती रहती हैं। बिलों को ठीक करने के नाम पर विद्युतकर्मियों पर रिश्वत लेने समेत विभिन्न आरोप लगते रहते हैं।

उपभोक्ताओं को जल्द ही इस समस्या से पूरी तरह निजात मिल जाएगी। जिले के करीब 11 लाख उपभोक्ताओं के आरडीएसएस (पुर्नोत्थान वितरण क्षेत्र योजना) के अंतर्गत स्मार्ट मीटर लगाए जाएंगे। इसके लिए उपभोक्ता से कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।

जिले के सभी उपभोक्ताओं के अभी सामान्य मीटर लगे हुए हैं। इनमें विद्युत निगम उनके मीटर के खाता नंबर से बिल बनाता है। एक से चार किलोवाट के कनेक्शन वाले उपभोक्ताओं के मीटर से मीटर रीडर रीडिंग लेकर एप से बिल बनाता है।

विद्युत निगम को आए दिन मिलती हैं शिकायतें

इससे कई बार मीटर रीडर रीडिंग स्टोर कर कम यूनिट का बिजली बिल बना देता है। बाकी यूनिट को मीटर में स्टोर कर देता है। इससे उपभोक्ता का अगले माह अधिक बिजली बिल आता है। बिल कम करने के नाम पर मीटर रीडर उपभोक्ता से रिश्वत मांगता है। इसको लेकर विद्युत निगम में आए दिन शिकायतें आती रहती हैं।

बीते दो साल में 10 से अधिक मीटर रीडर पर कार्रवाई भी हो चुकी है। वहीं पांच किलोवाट से अधिक वालों के बिजली बिल एमआरआइ (मीटर रीडिंग इंस्ट्रूमेंट) प्रणाली के अंतर्गत बनाए जा रहे हैं।

इनमें से ज्यादातर उपभोक्ताओं को देरी से बिजली बिल प्राप्त हो रहे हैं। स्मार्ट मीटर लगने से उपभोक्ता की इन सभी समस्याओं से राहत मिल जाएगी। उपभोक्ता मीटर को रिचार्ज करने के बाद भी ही बिजली का उपयोग कर सकेगा। इससे बिल का झंझट ही खत्म हो जाएगा।

विद्युत निगम ने सर्वे का कार्य शुरू किया

जिन इलाकों में विद्युत निगम का राजस्व अधिक है और उन इलाकों से समय से बिल जमा नहीं होता है। ऐसे इलाकों में विद्युत निगम पहले स्मार्ट मीटर लगाएगा। इसके लिए विद्युत निगम के जोन-तीन के विद्युत वितरण खंड-दो में सर्वे कर रहा है। सबसे पहले इस क्षेत्र में ही मीटर लगाए जाएंगे। वहीं, जोन-एक व दो में भी सर्वे का कार्य किया जा रहा है।

27 माह में पूरे जिले में बदले जाएंगे मीटर

जिले को तीन जोन में बांटा गया है। इन तीनों जोन में करीब 10.65 लाख उपभोक्ता हैं। अगले 27 माह सभी उपभोक्ताओं के मीटर बदलकर स्मार्ट मीटर लगा दिए जाएंगे। निगम के अधिकारियों का कहना है कि चुनाव खत्म होते ही मीटर लगाने के कार्य शुरू कर दिया जाएगा। वर्ष 2026 से पहले सभी के मीटर बदल दिए जाएंगे।

BJP नेता सूरजपाल अम्मू ने पार्टी से दिया इस्तीफा, क्षत्रिय समाज के साथ अनदेखी करने का आरोप

भाजपा नेता सूरजपाल अम्मू ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने भाजपा के शीर्ष नेतृत्व पर क्षत्रिय समाज के साथ अनदेखी करने का आरोप लगाया है। राजनीतिक एवं सामाजिक विरोधी विचारधारा को अपनाने का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि पिछले कुछ सालों से ऐसा चल रहा है। महारानी पद्मावत फिल्म के समय संजय लीला भंसाली द्वारा क्षत्रिय समाज की भावनाओं से खिलवाड़ करने का दुस्साहस किया गया।

गुरुग्राम। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता सूरजपाल सिंह अम्मू ने बृहस्पतिवार को पद और पार्टी दोनों से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने अपना इस्तीफा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा को भेजा है। इसकी कॉपी प्रदेश भाजपा अध्यक्ष व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को भेजी है।

उन्होंने भाजपा के शीर्ष नेतृत्व पर क्षत्रिय समाज के साथ अनदेखी करने का आरोप लगाया है। राजनीतिक एवं सामाजिक विरोधी विचारधारा को अपनाने का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि पिछले कुछ सालों से ऐसा चल रहा है। महारानी पद्मावत फिल्म के समय संजय लीला भंसाली द्वारा क्षत्रिय समाज की भावनाओं से खिलवाड़ करने का दुस्साहस किया गया। उस समय क्षत्रिय समाज के लोग अपने मान सम्मान को बचाने के लिए लोकतांत्रिक तरीके से सड़क पर आंदोलन करने उतरे थे।

क्षत्रिय समाज की माता बहनों के चरित्र पर टिप्पणी

आंदोलन करने वालों पर झूठे मुकदमे दर्ज कर हजारों नौजवानों के भविष्य को बर्बाद करने वाली कार्रवाई भाजपा शासित प्रदेशों में की गई थी। आज तक युवा झूठे मुकदमों को झेल रहे हैं। बार-बार मनुहार के बाद भी मुकदमे वापस नहीं लिए गए। वर्तमान में गुजरात में वरिष्ठ भाजपा नेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री द्वारा क्षत्रिय समाज की माता बहनों के चरित्र पर लज्जाजनक टिप्पणी की गई। ऐसे व्यक्ति को भाजपा ने टिकट का इनाम देकर क्षत्रिय समाज को अपमानित करने का काम किया।

भारत के पास तिब्बत के रूप में है ऐसा ब्रह्मास्त्र, चीन की सारी चालबाजियों को पल भर में कर देगा परास्त

फिलीपींस में भारत की ब्रह्मोस मिसाइल पहुंच गई है और वहां की सैना उसकी तैनाती करेगी। फिलीपींस में अमेरिका ने अपनी नई टायफून मिसाइल प्रणाली तैनात कर रखी है। फिलीपींस में अमेरिका को चार बेस का एक्सेस मिला हुआ है।

अशोक मधुप

चीन आजकल परेशान है। बताया जा रहा है कि वह भारत के रवैये से डरा हुआ है। दुश्मन का डरा होना और परेशान रहना ज्यादा बेहतर है। इससे वह अपनी समस्या सुलझाने में लगेगा। अपने दुश्मन देशों को तंग नहीं करेगा। उन पर दबाव–धौंस नहीं दिखाएगा। कभी चीन का व्यवहार हमें परेशानी कर रहा है। वह सीमापर घुसपैंठ करता। क्षेत्र के अंदर आए भारत के भाग में जमता और सौदेबाजी करता। किंतु अब ये बदलता भारत है। बकौल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अब भारत दुश्मन को उसके घर में घुसकर मार रहा है। परिणाम है कि आज चीन की आंखों में आंखे डालकर बात की जा रही है। सूचनाएं हैं कि चीन भारत की ब्रह्मोस से डरा हुआ है जब से भारत का शक्तिशाली ब्रह्मोस मिसाइल चीन के करीब तैनात की हैं और चीन के दुश्मन फिलीपींस को दी हैं, तबसे चीन दहशत में हैं। चीन ब्रह्मोस का काट नहीं निकाल पा रहा है। वह जानता है कि उसके सारे हथियार भी एक बार फायर की गई ब्रहमोस को नहीं रोक सकते।

ब्रह्मोस की काट निकालने के लिए चीन फिलीपींस को डराने के की कोशिश में जुटा है। चीन ने फिलीपींस के बेहद करीब अपने ड्रोन को भेजा है ताकि फिलीपींस डर जाए। लेकिन चीन का ये कदम बताता है कि असली डर फिलीपींस को नहीं बल्कि चीन को है क्योंकि अब साउथ चाइना सी के बिल्कुल करीब अमेरिकी सेनाएं भी आ गई हैं। भारत पहले ही चीन के शत्रु देश वियतनाम की पीपुल्स नेवी को अपना आधुनिक युद्धपोत आईएनएस कृपाण का हस्तांतरण कर चुका है। इस युद्ध पोत पर आधुनिक मिसाइल तैनात हैं। दरअसल अब तक चीन भारत को घेरने में लगा था। वह भारत के दुश्मन देशों को

आधुनिक अस्त्र शस्त्र की आपूर्ति करने में लगा था। अब ऐसा उसके साथ हो रहा है तो वह परेशान है। चीन भारत में अशांति फैलाने वाले नक्सलाइड, मिजों एव अन्य आंतकियों को आधुनिक शस्त्रों की आपूर्ति करता रहा है। सूचनाएं रही हैं कि उन्हे प्रशिक्षण भी दे रहा है। ऐसे में समय की मांग है कि भारत अब चीन के विरूद्ध चल रहे तिब्बत के पूर्ण स्वतंत्रता के आंदोलन का खुलकर समर्थन करें। जरूरत पड़ने पर तिब्बती के आजादी के आंदोलन के लड़ाकों को शस्त्र के साथ प्रशिक्षण भी दे।

भारत की नहीं चीन के रवैये से दुनिया के लगभग सभी देश परेशान हैं।इसी कारण फिलीपींस और अमेरिकी सेना का साझा युद्धाभ्यास हाल में शुरू हुआ। इस मिलिट्री ड्रील में जापान की सेनाएं भी शामिल हो रही हैं। 16000 हजार सैनिक साझा युद्धभ्यास में शामिल हैं। सबसे बड़ी बात कि फ्रांस और ऑस्ट्रेलिया के सैनिक भी कुछ दिन में इस ज्वाइंट एक्सरसाइज से रहेंगे। मतलब पांच देश चीन को घेरने के लिए एक साथ होंगे। इस ड्रील में समुद्री और हवाई हमलों का अभ्यास किया जाएगा। भारत के ब्रह्मोस देने के बाद से चीन परेशान है। अभी तो ब्रह्मोस तैनात भी नही हुई होंगी कि चीन परेशान है। वह फिलीपींस पर द्रोण उड़ाकर उसे धमका रहा है। सवाल है कि क्या ड्रोन के जरिए चीन ब्रह्मोस के बारे में जानकारी जुटाना चाहता है। सवाल तो ये भी है कि क्या चीन उस ठिकाने का पता लगाना चाहता है, जहां फिलीपींस ब्रह्मोस को तैनात करेगी। चीन ने ड्रोन के अलावा समंदर में मिलिट्री ड्रील के जरिए भी फिलीपींस को आंख दिखाने की कोशिश की है। चीन की नौसेना ने साउथ चाइना सी में लड़ाकू विमानों और युद्धपोत से मिसाइलें दागकर फिलीपींस को डराने की कोशिश की।

दो दिन के अंदर चीन के ये ये कदम बताते हैं कि चीन ब्रह्मोस मिसाइल की तैनाती से भयभीत है। चीन के टेंशन इस बात की है कि अब भारत चीन सीमा के साथ चीन-फिलीपींस सीमा पर भी ब्रह्मोस तैनात होगा। अब तो चीन के एक और दुश्मन और पड़ोसी वियतनाम ने भी ब्रह्मोस में दिलचस्पी दिखाई है, जो चीन के लिए खतरे की घंटी है।

फिलीपींस में भारत की ब्रह्मोस मिसाइल पहुंच गई है और वहां की सैना उसकी तैनाती करेगी। फिलीपींस में अमेरिका ने अपनी नई टायफून मिसाइल प्रणाली तैनात कर रखी है। फिलीपींस में अमेरिका को चार बेस का एक्सेस मिला हुआ है। चीन के करीब जापान पर भी अमेरिका का बेस है। ऑस्ट्रेलिया-सिंगापुर में अमेरिका ने अपना बेस बना रखा है। थाईलैंड और साउथ कोरिया में अमेरिकी सेनाएं तैनात हैं। चीन के करीब गुआम में भी अमेरिका का बेस है। इन जगहों से वक्त पड़ने पर कभी भी अमेरिका चीन पर हमला कर सकता है। चाइना सी के बिल्कुल करीब अमेरिकी सेनाएं भी आ गई हैं। चीनी सेना के प्रवक्ता ने फिलीपीन्स को ब्रह्मोस देने पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि दोनों देशों के बीच सुरक्षा सहयोग में इस बात का ख्याल रखा जाए कि इससे किसी तीसरे पक्ष के हितों को नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए। चीनी रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता कर्नल वू कियान ने कहा कि 'चीन हमेशा मानता है कि दो देशों के बीच रक्षा और सुरक्षा सहयोग से किसी तीसरे पक्ष के हितों को नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए और क्षेत्रीय शांति और स्थिरता को खतरा नहीं होना चाहिए। कर्नल वू कियान ने कहा कि एशिया-प्रशांत में अमेरिका की ओर से बैलिस्टिक मिसाइलों की तैनाती का हम कड़ा विरोध करते हैं। अमेरिका का यह कदम क्षेत्रीय देशों की सुरक्षा को गंभीर रूप से खतरे में डालते हुए क्षेत्रीय शांति को खतरा पैदा करता है।

आज चीन को याद आ रहा है कि दो देशों के रक्षा सहयोग से तीसरे को नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए, किंतु जब वह खुद ऐसा करता है, तब उसे कुछ याद नहीं आता। लंबे समय से वह पाकिस्तान को आधुनिकतम युद्धक शस्त्र देने में लगा हुआ है। वह नहीं जानता कि पाकिस्तान इन शस्त्रों का प्रयोग किस देश के विरूद्ध करेगा। वह अच्छी तरह से जानता और समझता है। किंतु अपने हित में उसे कुछ याद नहीं आता। अब उसके दुश्मन देश भारत, अमेरिका और फ्रांस आदि ऐसा ही कर रहे हैं तो उसे याद आ रहा है तीसरे राष्ट्र को नुकसान न पहुंचे।

भारत फिलीपीन्स को ही ब्रह्मोस मिसाइल नहीं दे रहा। वियतनाम भी इस मिसाइल को खरीदने में रूचि दिखा रहा है। यह तो है कि वियतनाम भी खरीदता है तो भारत उसे ब्रह्मोस देगा। प्रथम वरीयता पर देगा। भारत अपना आधुनिकतम युद्धपोत खुखरी वियतनाम को पहले ही उपहार में दे चुका है। ये आधुनिक युद्धास्त्रों से सज्जित युद्धपोत है। भारत की ये कार्रवाई दक्षिण चीन सागर में चीन के बढ़ते आक्रामक रवैये को लेकर चिंताओं के बीच यह भारत और वियतनाम में बढ़ती रणनीतिक साझेदारी को दर्शाता है। अधिकारियों ने कहा भी कि भारत ने पहली बार किसी मित्रवत देश को कोई सेवारत पोत उपहार में दिया है। भारतीय नौसेना ने कहा कि पोत पूरी ''हथियार प्रणाली'' के साथ वियतनाम पीपुल्स नेवी (वीपीएन) को सौंपा गया है। आईएनएस कृपाण, 1991 में सेवा में शामिल किए के बाद से भारतीय नौसेना के पूर्वी बेड़े का एक अभिन्न अंग रहा और पिछले 32 वर्षों में कई ऑपरेशन में भाग लिया। लगभग 12 अधिकारियों और 100 नाविकों द्वारा संचालित, जहाज 90 मीटर लंबा और 10.45 मीटर चौड़ा है।

सिट्रोएन बेसाल्ट भारतीय सड़कों पर टेस्टिंग के दौरान आई नजर, जानिए कब तक हो सकती है लॉन्च

तमिलनाडु के तिरुवल्लूर में लिए गए नवीनतम स्पाई शॉट्स में Besalt SUV को बिना किसी कैमोफ्लैग के साथ देखा गया है। Citroen Basalt SUV के पिछले स्पाई शॉट्स से पहले ही पता चल गया है कि वाहन का फ्रंट फेसिया कैसा दिखेगा। Citroen ने अभी तक बेसाल्ट एसयूवी के पावरट्रेन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं दी है। आइए इसके बारे में जान लेते हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। फ्रांसीसी ऑटो दिग्गज Citroen अपनी C5 Aircross और C3 Aircross पेश करने के बाद भारत में अपनी तीसरी एसयूवी लॉन्च करने की योजना बना रही है। Citroen Basalt को भारतीय सड़कों पर हाल ही में टेस्टिंग के दौरान देखा गया है।

x

तमिलनाडु के तिरुवल्लूर में लिए गए नवीनतम स्पाई शॉट्स में Besalt SUV को बिना किसी कैमोफ्लैग के साथ देखा गया है। तस्वीरें, संभवतः एसयूवी के एंट्री-लेवल वेरिएंट की हैं और इसके एक्सटीरियर डिजाइन एलीमेंट को पूरी तरह से दिखाती हैं। बेसाल्ट एसयूवी के इस साल की दूसरी छमाही में भारत में लॉन्च किया जा सकता है।

नवीनतम जासूसी शॉट्स में सिट्रोएन बेसाल्ट एसयूवी को पीछे और किनारों से दिखाया गया है। दोनों तस्वीरें एसयूवी के कूप-स्टाइल डिजाइन को एक ढलान वाली छत के साथ कैप्चर करती हैं, जो बूट के साथ मिलती है।

डिजाइन और डायमेंशन

इसमें ए पिलर से सी पिलर तक की खिड़कियों के चारों ओर ब्लैक हाइलाइट्स, ब्लैक ओआरवीएम, पीछे की तरफ काले बंपर और रैप-अराउंड टेललाइट्स के साथ किनारों पर बड़े व्हील आर्च हैं। टेस्टिंग व्हीकल में अलॉय व्हील नहीं दिए गए हैं। हालांकि, उम्मीद है कि लॉन्च होने पर एसयूवी 15-इंच या 16-इंच के अलॉय व्हील सेट के विकल्प के साथ आएगी।

Citroen Basalt SUV के पिछले स्पाई शॉट्स से पहले ही पता चल गया है कि वाहन का फ्रंट फेसिया कैसा दिखेगा। मोटे तौर पर बेसाल्ट विजन कॉन्सेप्ट पर आधारित, एसयूवी में फ्रंट में प्रोजेक्टर एलईडी प्रोजेक्टर हेडलाइट्स और डीआरएल, फॉग लैंप के साथ बॉडी-कलर बंपर और सिट्रोएन लोगो के साथ एक स्लिम ग्रिल दी जाएगी।

इंटीरियर और फीचर्स

फीचर्स के मामले में, बेसाल्ट एसयूवी को 10.25-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, वायरलेस स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, ऑटोमैटिक क्लाइमेट कंट्रोल, ऑटो-डिमिंग आईआरवीएम, रेन-सेंसिंग वाइपर और कीलेस एंट्री जैसे फीचर्स के साथ पेश किए जाने की संभावना है।

इंजन और परफॉरमेंस

Citroen ने अभी तक बेसाल्ट एसयूवी के पावरट्रेन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं दी है। हालांकि, फ्रांसीसी कार निर्माता द्वारा एसयूवी को 1.2-लीटर टर्बो पेट्रोल मोटर से लैस करने की उम्मीद है, जिसे सी3 एयरक्रॉस एसयूवी के साथ भी पेश किया जाता है। इंजन को 6-स्पीड मैनुअल या ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन यूनिट के विकल्प के साथ पेश किया जा सकता है। ये इंजन 109 bhp की पावर और 205 Nm का पीक टॉर्क पैदा करने में सक्षम है।

ओला S1 X की शुरू हुई डिलीवरी, जानिए कितना खास है कंपनी का सबसे किफायती ई-स्कूटर

Ola S1 X को तीन बैटरी पैक विकल्पों – 2 किलोवाट 3 किलोवाट और 4 किलोवाट में पेश किया गया है। इनकी एक्स शोरूम कीमतें क्रमश : 69999 रुपये 84999 रुपये और 99999 रुपये हैं। S1 X अपने 2 kWh बैटरी पैक के साथ एक बार चार्ज करने पर 91 किमी की प्रमाणित रेंज प्रदान करता है। बैटरी को फुल चार्ज करने में 7 .4 घंटे का समय लगता है।

नई दिल्ली। Ola Electric ने आखिरकार भारतीय बाजार में अपने सबसे किफायती इलेक्ट्रिक स्कूटर S1 X की डिलीवरी शुरू कर दी है। आपको बता दें कि S1 X कंपनी का सबसे किफायती ई-स्कूटर है। आइए, इसके बारे में जान लेते हैं।

वेरिएंट और कीमत

S1 X को तीन बैटरी पैक विकल्पों - 2 किलोवाट, 3 किलोवाट और 4 किलोवाट में पेश किया गया है। इनकी एक्स शोरूम कीमतें क्रमशः 69,999 रुपये 84,999 रुपये और 99,999 रुपये हैं। ये कीमतें ओला इलेक्ट्रिक द्वारा हाल ही में की गई कीमत में कटौती के बाद की हैं।

चार्जिंग, मोटर और राइडिंग मोड्स

S1 X अपने 2 kWh बैटरी पैक के साथ एक बार चार्ज करने पर 91 किमी की प्रमाणित रेंज प्रदान करता है। बैटरी को फुल चार्ज करने में 7.4 घंटे का समय लगता है। इसके इलेक्ट्रिक मोटर से 6 किलोवाट का अधिकतम पावर आउटपुट निकलता है। स्कूटर तीन राइडिंग मोड्स - इको, नॉर्मल और स्पोर्ट्स प्रदान करता है और 85 किमी प्रति घंटे की टॉप स्पीड तक पहुंच सकता है।

टचस्क्रीन इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर के बजाय 3.5 इंच की एलसीडी स्क्रीन वाला यह स्कूटर एक फिजिकल की के साथ आता है। वहीं, एस1 एक्स के 3 kWh वर्जन की अधिकतम गति 90 किमी प्रति घंटा और रेंज 151 किमी है। 4 kWh संस्करण समान विशिष्टताओं को बनाए रखता है, लेकिन इसकी क्लेम्ड रेंज 190 किमी तक बढ़ जाती है।

कंपनी ने क्या कहा ?

डिलीवरी शुरू होने के मौके पर ओला इलेक्ट्रिक टेक्नोलॉजीज के मुख्य विपणन अधिकारी, अंशुल खंडेलवाल ने कहा-

' एस1 एक्स के साथ, हम ईवी को अपनाने को प्रभावित करने वाली प्रमुख बाधाओं में से एक के रूप में उच्च अग्रिम लागत को समाप्त कर रहे हैं। मास-मार्केट पोर्टफोलियो में हमारा प्रवेश हमें अपने लक्षित ग्राहक आधार को व्यापक बनाने में मदद करेगा। '

मामला ऐरा फेस्टिव सीजन से शुरू करेगी अपनी गियर वाली इलेक्ट्रिक बाइक की डिलीवरी, नई डिटेल्स आई सामने

मैटर ऐरा गियर के साथ आने वाली पहली इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल है जिसे राइडर शिफ्ट कर सकते हैं। इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल दो वेरिएंट 5000 और 5000+ में पेश की गई है। कंपनी की योजना अगले साल दो और वेरिएंट लाने की है। 5000 और 5000+ दोनों में 10 किलोवाट (13.4 बीएचपी) की इलेक्ट्रिक मोटर मिलती है जो 6 सेकंड में 0–60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ सकती है।

नई दिल्ली। Matter Group ने घोषणा की है कि वे 2024 के त्योहारी सीजन के दौरान अपनी ऐरा मोटरसाइकिल की डिलीवरी शुरू करेंगे। मैटर ऐरा गियर के साथ आने वाली पहली इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल है, जिसे राइडर शिफ्ट कर सकते हैं। इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल दो वेरिएंट 5000 और 5000+ में पेश की गई है। इनकी कीमत 1.74 लाख रुपये और 1.84 लाख रुपये है। दोनों कीमतें एक्स-शोरूम हैं।

कितनी खास होगी ये बाइक ?

कंपनी की योजना अगले साल दो और वेरिएंट लाने की है। 5000 और 5000+ दोनों में 10 किलोवाट (13.4 बीएचपी) की इलेक्ट्रिक मोटर मिलती है, जो 6 सेकंड में 0-60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ सकती है। कंपनी एक बार चार्ज करने पर 125 किमी की रेंज देने का वादा करती है।

ई-बाइक के फीचर्स

फीचर लिस्ट में 7 इंच का टचस्क्रीन कंसोल शामिल है जो नेविगेशन, म्यूजिक, कॉल और बहुत कुछ लाता है। ऐरा को किसी भी 5-एम्प सॉकेट का उपयोग करके चार्ज किया जा सकता है, जिससे इसे किसी भी प्लग पॉइंट में प्लग करना काफी सुविधाजनक हो जाता है। निर्माता का कहना है कि उसकी ई-मोटरसाइकिल 25 पैसे प्रति किमी की रनिंग लागत प्रदान करती है।

ये है कंपनी का प्लान

मैटर ऐरा ई-बाइक का उत्पादन शुरू करने के लिए अपना प्लांट तैयार कर रहा है। कंपनी की उत्पादन क्षमता 60,000 यूनिट प्रति वर्ष है और मांग के आधार पर उत्पादन क्षमता को 120,000 यूनिट तक बढ़ाया जाएगा। कंपनी 2025 तक दूसरी विनिर्माण सुविधा के विस्तार को लेकर भी महत्वाकांक्षी है।

एमजी ने हेक्टर, एस्टर, जेडएस ईवी और कॉमेट ईवी के स्पेशल एडिशन किए लॉन्च, जानिए कितने खास हैं ये मॉडल

MG Hector का लिमिटेड एडिशन 21.20 लाख रुपये की शुरुआती कीमत पर उपलब्ध है। इसके अलावा MG ZS EV की कीमत 24 .18 लाख MG Astor की कीमत 14 .81 लाख रुपये और एमजी कॉमेट की कीमत 9 .40 लाख रुपये है। आपको बता दें कि ये सभी कीमतें एक्स-शोरूम दिल्ली की हैं। आइए इन Special Edition मॉडलों के बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। MG Motor ने हाल ही में 100-Year Limited Edition के लॉन्च की घोषणा की है, जिसमें 110 साल से अधिक के ब्रिटिश रेसिंग इतिहास में निहित पॉपुलर 'एवरग्रीन' कलर शामिल है। आइए, इनकी कीमतों और स्पेसिफिकेशन के बारे में जान लेते हैं।

लिमिटेड एडिशन मॉडलों की कीमत

MG Hector का लिमिटेड एडिशन 21.20 लाख रुपये की शुरुआती कीमत पर उपलब्ध है। इसके अलावा MG ZS EV की कीमत 24.18 लाख, MG Astor की कीमत 14.81 लाख रुपये और एमजी कॉमेट की कीमत 9.40 लाख रुपये है। आपको बता दें कि ये सभी कीमतें एक्स-शोरूम दिल्ली की हैं।

पहले से क्या बदला ?

इन स्पेशल एडिशन में स्ट्राइकिंग डार्क ग्रीन एक्सटीरियर के साथ स्टैरी ब्लैक रूफ दिया गया है। इनके रियर टेलगेट पर 100-Year Limited Edition बैज है, जो लिमिटेड एडिशन की स्थिति को दर्शाता है। कार के केबिन में फ्रंट हेडरेस्ट पर '100-ईयर एडिशन' की कढ़ाई के साथ एक ऑल-ब्लैक थीम को अपनाया गया है, जो एक स्पोर्टी टच जोड़ता है।

कब हुई MG की शुरुआत ?

ब्रिटिश ऑटोमोटिव अग्रणी विलियम मॉरिस के मार्गदर्शन में एमजी की स्थापना मॉरिस गैरेज के रूप में की गई थी। ब्रांड का विकास महाप्रबंधक सेसिल किम्बर द्वारा संचालित किया गया था, जिनके पास स्पोर्टियर लुक वाली तेज कारें बनाने का दृष्टिकोण था।

1930 तक एमजी ने अपना पहला मॉडल, 14/28 सुपर स्पोर्ट्स लॉन्च किया, जो मॉरिस ऑक्सफोर्ड प्लेटफॉर्म पर आधारित था लेकिन एक चिकनी दो-सीटर बॉडी के साथ डिजाइन किया गया था।

रॉयल एनफील्ड ने गुरिल्ला 450 को इंडिया में कराया ट्रेडमार्क, जल्द लॉन्च होगी हिमालयं 450-बेस्ड नई बाइक

परिवहन विशेष न्यूज

Royal Enfield ने हाल ही में Guerrilla 450 नेमप्लेट के लिए एक ट्रेडमार्क दायर किया है जिससे पता चलता है कि यह देश में उसकी दूसरी 450 सीसी मोटरसाइकिल का नाम होगा। इस मॉडल को पहले ही भारत में कई स्थानों पर परीक्षण करते हुए देखा जा चुका है। रॉयल एनफील्ड ने अभी तक मोटरसाइकिल की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है।

नई दिल्ली। Royal Enfield की 2024 में भारत में अपने पोर्टफोलियो का और विस्तार करने की योजना है, जिसमें साल भर में कई लॉन्च होंगे। दिग्गज दोपहिया वाहन निर्माता ने हाल ही में Guerrilla 450 नेमप्लेट के लिए एक ट्रेडमार्क दायर किया है, जिससे पता चलता है कि यह देश में उसकी दूसरी 450 सीसी मोटरसाइकिल का नाम होगा। ट्रेडमार्क एप्लिकेशन में मॉडल का लोगो भी देखा जा सकता है।

Royal Enfield Guerrilla 450 में क्या खास ?

वर्तमान में, ट्रेडमार्क आवेदन की स्थिति केवल Formalities Check Pass के रूप में है। हालांकि गुरिल्ला 450 के बारे में विवरण कम हैं, यह संभावना है कि यह वही 452cc, लिक्विड-कूल्ड, सिंगल-सिलेंडर इंजन लेगा जो इसके एडवेंचर सिबलिंग, हिमालयन 450 को पावर देता है।

टेस्टिंग के दौरान आ चुकी है नजर

इस मॉडल को पहले ही भारत में कई स्थानों पर परीक्षण करते हुए देखा जा चुका है। इसमें फ्रंट सस्पेंशन के लिए पारंपरिक टेलीस्कोपिक फोर्क्स, पीछे एक मोनोशॉक यूनिट, डुअल-चैनल एबीएस के साथ दोनों पहियों पर डिस्क ब्रेक, एक न्यूनतम डिजाइन और बहुत कुछ होने की संभावना है।

किसे मिलेगी टक्कर ?

लॉन्च होने पर, यह मोटरसाइकिल अत्यधिक प्रतिस्पर्धी मिड-कैपेसिटी सेगमेंट को कंपीट करेगी, जो ट्रायम्फ स्पीड 400, पल्सर एनएस 400 जेड, केटीएम 390 ड्यूक और आगामी हीरो एक्सपल्स 400 जैसे प्रतिद्वंद्वियों को टक्कर देगी। उम्मीद है कि ये साल के अंत में लॉन्च होने वाली है।

कब तक होगी लॉन्च ?

रॉयल एनफील्ड ने अभी तक मोटरसाइकिल की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है, लेकिन ट्रेडमार्क फाइलिंग और लीक हुआ लोगो जल्द ही आने की ओर इशारा करता है। गुरिल्ला 450 भारतीय मोटरसाइकिल बाजार में एक बेहतरीन प्रोडक्ट के रूप में एंट्री मारने वाली है।

ऑडी Q3 और Q3 स्पोर्टबैक का बोल्ड एडिशन हुआ लॉन्च, जानिए पहले से क्या बदला

नई दिल्ली। Audi India ने भारतीय बाजार में Q3 और Q3 Sportback का नया बोल्ड एडिशन लॉन्च किया है। इनकी कीमतें क्रमशः 54.65 लाख रुपये और 55.71 लाख रुपये है। आपको बता दें कि कि दोनों कीमतें एक्स-शोरूम हैं।

बोल्ड एडिशन में क्या नया ?

बोल्ड एडिशन में केवल ब्लैक-आउट बैज और अलॉय व्हील्स के लिए डुअल-टोन कलर स्कीम के रूप में कॉस्मेटिक बदलाव किए गए हैं। इसके अलावा, एसयूवी को ब्लैक स्टाइलिंग पैकेज प्लस भी मिलता है। ऑडी ने यह भी खुलासा किया है कि Q3 और Q3 स्पोर्टबैक के बोल्ड संस्करण की सीमित यूनिट ही उपलब्ध होंगी।

इंजन और परफॉरमेंस

बोल्ड एडिशन को पावर देने के लिए वही 2.0-लीटर टीएफएसआई पेट्रोल इंजन है, जो 189 बीएचपी की अधिकतम पावर और 320 एनएम का पीक टॉर्क आउटपुट देता है। यह एक ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ आता है, जो ऑडी के क्वाट्रो ऑल-व्हील ड्राइव सिस्टम का उपयोग करके चारों पहियों का बराबर पावर भेजता है।

डिजाइन और इंटीरियर

बोल्ड एडिशन में नए 18 इंच के अलॉय व्हील, एलईडी टेल लैंप के साथ एलईडी हेडलैंप, पैनोरमिक सनरूफ और एक रियर पार्किंग कैमरा दिया गया है। इसके इंटीरियर में कुछ अपग्रेड किए गए हैं। इसमें फोर-वे लम्बर सपोर्ट के साथ पावर-एडजस्टेबल फ्रंट सीट्स, लेदर फिनिश वाली सीट अपहोल्स्ट्री, लेदर फिनिश वाले पैडल शिफ्टर्स के साथ मल्टी-फंक्शन स्टीयरिंग व्हील, 2-जोन क्लाइमेट कंट्रोल और ऑडी स्मार्टफोन इंटरफेस शामिल है।

निर्माता छह एयरबैग, एमएमआई टच के साथ एमएमआई नेविगेशन प्लस, ऑडी ड्राइव सेलेक्ट, ऑडी वर्चुअल कॉकपिट प्लस, जेस्चर-कंट्रोल टेलगेट के साथ कम्फर्ट की, वायरलेस चार्जिंग सिस्टम के साथ ऑडी फोन बॉक्स और 10 स्पीकर के साथ एक साउंड सिस्टम भी दे रही है।

सैम पित्रोदा के माध्यम से पश्चिम की साजिश

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

कांग्रेस की रणनीति को समझने के लिए केवल सैम पित्रोदा को समझना ही काफी नहीं है, कनाडा और अमरीका के व्यवहार को समझना होगा। सभी मिल कर भारत की घेराबंदी कर रहे हैं और उनकी साजिशों को सफल बनाने के लिए भारत में भी बहुत मिल ही जाते हैं। अंबेडकर ने एक भाषण में इसी खतरे की ओर संकेत किया था'

लगता है अब कांग्रेस अपने असली रंग में आना शुरू हो गई है। उसकी असलियत भारत के लोगों को पहले से ही ज्ञात है, लेकिन अभी तक कांग्रेस ने स्वयं अपने मुख से उसे कभी स्वीकारा नहीं था। लेकिन 2024 के लोकसभा के चुनावों ने तापमान इतना बढ़ा दिया है कि कांग्रेस ने एक के बाद एक अपने सभी आवरण उतारने शुरू कर दिए हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष, सोनिया परिवार के अंतरंग, राहुल गान्धी के राजनीतिक गुरू सैम पित्रोदा ने भारत के लोगों के प्रति कांग्रेस की सोच को एक महत्वपूर्ण साक्षात्कार में प्रकट किया। सैम पित्रोदा अमरीका में रहते हैं। उन्होंने भारत के समाज शास्त्र को नए सिरे से पारिभाषिक करते हुए कहा कि पश्चिमी भारत में रहने वाले लोग अरबों जैसे हैं। पूर्वी भारत में रहने वाले लोग चीनियों जैसे हैं। दक्षिणी भारत में रहने वाले लोग अफ्रीकियों जैसे हैं। उत्तरी भारत में रहने वाले लोग गोरों जैसे हैं। सैम पित्रोदा अमरीका में रहते हैं। अमरीका में अधिकांश गोरे इंग्लैंड से ही गए हुए हैं। इसलिए सैम को लगता होगा कि यदि भारत में अरब, अफ्रीकी, चीनी जैसे लोगों पर ही अध्ययन खत्म कर दिया तो अमरीका क्या कहेगा? सैम को अमरीका का कर्ज भी चुकाना था। इसलिए उन्होंने उत्तरी भारत को 'गोरों' के खाते में जोड़ दिया। लेकिन जहां तक दक्षिण भारतीयों का सवाल है, उनको सैम पित्रोदा ने अफ्रीकियों के साथ उनके रंग के आधार पर ही जोड़ा होगा, क्योंकि दोनों का रंग काला है। दूसरी कोई समानता तो उनकी आपस में मिलती नहीं। लेकिन क्या केवल रंग को आधार बना कर कांग्रेस के बुद्धिजीवी उनको अफ्रीकी कहना शुरू कर देंगे? बाबा साहिब अंबेडकर ने कहा था कि हिन्दुस्तान में और अनेक कारणों से समाज में भेद-व्यवहार हो सकता है, लेकिन रंग कभी भी भेदभाव का आधार नहीं रहा।

पश्चिम में इसके विपरीत है। वहां भेद का आधार ही रंग भेद है। वहां का समाज रंगभेद पर आधारित है। कांग्रेस और उसके गुरू सैम पित्रोदा भी भारत को पश्चिम की समाजशास्त्रिय दृष्टि से समझने की कोशिश करते हैं, इसलिए उनके अध्ययन में दक्षिण भारत अफ्रीका बन जाता है। जाहिर है सोनिया गान्धी को सैम पित्रोदा के इस अध्ययन में कुछ अनुचित नहीं लगता होगा, क्योंकि वे भी भारत को पश्चिम के चश्मे से ही देखती हैं। पश्चिम के देश और सांस्कृतिक लिहाज से उनके प्रतिनिधि देश उत्तरी अमरीका भारत पर दोहरा आक्रमण करते हैं। वे भारत को सांस्कृतिक लिहाज से तोडना चाहते हैं क्योंकि भारत उनके 'कलैश ऑफ सिविलाईजेशन' के थीसिस में किसी प्रकार भी फिट नहीं बैठता। भारत दुनिया में सबसे पुरानी जीवन्त सभ्यता और संस्कृति वाला देश है। यूरोप दो हजार साल पुरानी संस्कृति का वाहक है। ब्रिटिश, पुर्तगाल और फ्रांसीसी शासन काल में भारत में भी प्रयोग किया गया कि भारतीय अपनी मूल संस्कृति, स्वभाव और प्रकृति को छोडक़र पश्चिमी मान्यताओं में स्वयं को ढाल लें। इन यूरोपीय शासकों ने जब भारत छोड़ा तब उन्हें इस बात की तसल्ली थी कि जिन भारतीय शासकों के हाथ में वे शासन छोड़ कर जा रहे हैं वे भी इसी नीति को जारी रखेंगे। अब तक सभी कुछ उनकी योजना के अनुसार ही चल रहा था। भारत में कांग्रेसी शासन ने अंग्रेजों की उसी नीति को जारी रखा।

यही कारण था भारतीयों के लिए पश्चिम एक मानक बना रहा। लेकिन पिछले एक दशक से भारतीयों ने सत्ता भाजपा को सौंप दी। भाजपा ने एक बार फिर से भारतीय स्वभाव और प्रकृति के साथ जुडना शुरू किया, तब पश्चिमी देशों और वहां के थिंक टैंकों को लगा कि यदि भाजपा ज्यादा देर सत्ता में रही तो उनकी चार सौ साल की मेहनत बेकार हो जाएगी। इतना ही नहीं, यदि भारत में सोनिया परिवार पराजित हो गया तो यूरोप की इस सांस्कृतिक नीति को क्रियान्वित कौन करेगा? लेकिन सोनिया परिवार कैसे जीते, इसके लिए वही यूरोपीय टोटके अपनाए जा रहे हैं जो निश्चय ही भारतीय जमीन पर बेकार सिद्ध होंगे। सैम पित्रोदा का यह टोटका उसी प्रकार का है। इसमें ताकत हो न हो, लेकिन यह भारत को बदनाम करता है, उसे अपमानित भी करता है। सैम ने अपने इस टोटके में कुछ और बातें भी कही हैं। उसका कहना है कि भाजपा राम मंदिर और रामनवमी के माध्यम से देश को चुनौती दे रही है। सैम के इस कथन का अभिप्राय तो यही हुआ कि राम और राम नवमी भारत के लिए विदेशी हैं जिनके माध्यम से भारत को चुनौती दी जा रही है। सैम पित्रोदा से पूछा जा सकता है कि यदि राम भारत के लिए विदेशी हैं और वे भारत को चुनौती दे रहे हैं तो भारत में देसी कौन है? बाबर, औरंगजेब या लार्ड माऊंटबेटन? दरअसल सोनिया कांग्रेस की जडें.भारत की मिट्टी में न होकर उस विदेशी मिट्टी में हैं जिसे भारत में राम भी भारत को चुनौती देते लगते हैं। सोनिया कांग्रेस के ही एक नेता ने कहा था कि गोवा में तो भारत का संविधान थोपा गया था। यानी भारत के इस हिस्से में तो पुर्तगाल का संविधान ही उचित था। इससे स्पष्ट हो रहा है कि सोनिया कांग्रेस की परतें धीरे धीरे उतर रही हैं। लेकिन सैम पित्रोदा द्वारा भारत पर किए गए इस आक्रमण को आईसोलेशन में नहीं देखा जा सकता।

यह लम्बी श्रृंखला की केवल एक कड़ी है। इस श्रृंखला का मूल सिरा अमरीका के हाथ में है। सैम पित्रोदा भारत के सामाजिक ताने बाने पर चोट कर रहे हैं तो अमरीका कनाडा के साथ मिल कर भारत की प्रकृति को विश्व में खंडित करने का प्रयास कर रहा है। इतना ही नहीं, उत्तरी अमरीका के ये देश भारत को खंडित करने की प्रक्रिया में उलझे हुए हैं। अमरीका और कनाडा ने गैंगवार में मारे गए निज्जर की हत्या और पन्नू को मारने के प्रयास की एक घटना परिचालित कर, इन दोनों घटनाओं को भारत के मत्थे मढने का प्रयास किया है। समय के चुनाव पर ध्यान देना जरूरी है। जिस दिन कनाडा निज्जर की हत्या को लेकर भारत की तथाकथित संलिप्तता को लेकर कोई बयान देता है, उसके दूसरे या तीसरे दिन अमरीका भी गुरपतवन्त सिंह पन्नू की तथाकथित हत्या के प्रयास में भारत की संलिप्तता को लेकर जरूर कोई न कोई बयान देता है।

मकसद इतना ही है कि दोनों के बयान का सामूहिक प्रभाव विश्व जनमानस पर पड़े। अमरीका भारत का एक 'रोग स्टेट' की तरह का इमेज स्थापित करना चाहता है और सैम पित्रोदा उसकी सामाजिक संरचना को तार तार करने के प्रयास में लगा हुआ है। कांग्रेस का ही एक दूसरा वरिष्ठ नेता चरणजीत सिंह चन्नी, जो पंजाब में मुख्यमंत्री भी रह चुका है, कुलगाम में पाकिस्तानी आतंकवादी हमले में हुए शहीद सैनिक का उपहास उड़ाता है। यूरोप की ईसाई मिशनरियां पिछले लम्बे अरसे से मांग कर रही थीं कि भारत सरकार अपनी जनगणना नीति में परिवर्तन करे। वह जनगणना जाति के आधार पर करे। इसका इन मिशनरियों को एक लाभ है। भारत की सामूहिक पहचान को धुंधला किया जा सकता है। अब सोनिया परिवार के प्रमुख सदस्य राहुल गान्धी ने सार्वजनिक रूप से घोषणा की है कि यदि कांग्रेस सत्ता में आई तो वह जनगणना के समय 'सरना कोड' स्थापित करेगी। कांग्रेस की रणनीति को समझने के लिए केवल सैम पित्रोदा को समझना ही काफी नहीं है, कनाडा और अमरीका के व्यवहार को समझना होगा। सभी मिल कर भारत की घेराबन्दी कर रहे हैं और उनकी साजिशों को सफल बनाने के लिए भारत में भी बहुत मिल ही जाते हैं। बाबा साहिब अंबेडकर ने संविधान सभा के अपने अंतिम भाषण में इसी खतरे की ओर संकेत किया था। सैम पित्रोदा सीमाओं को लांघकर बयान दे रहे हैं और भारत की छवि को धूमिल करने का प्रयास कर रहे हैं।

संपादक की कलम से

अब हिंदू-मुस्लिम आबादी

आज भारत की जनसंख्या 144 करोड़ से अधिक है, जो विश्व में सर्वाधिक है। हालांकि 2021 में जनगणना नहीं की जा सकी, क्योंकि वह कोरोना वैश्विक महामारी का दौर था। जनगणना 2011 में की गई थी, उसके बाद 13 लंबे साल गुजर चुके हैं, लेकिन कोई अधिकृत जनगणना नहीं हुई है। 2011 में हिंदू आबादी 79.80 फीसदी थी, जबकि मुस्लिम आबादी 14.20 फीसदी थी। मुसलमानों की बढ़ोतरी दर करीब 25 फीसदी थी, जबकि हिंदुओं की बढ़ोतरी दर करीब 17 फीसदी थी। यानी हिंदुओं की तुलना में मुसलमान बढ़ रहे थे। आजादी के बाद 1951 में देश में करीब 3.5 करोड़ मुसलमान थे, जिनकी आबादी 2023 में बढ़ कर 20 करोड़ के पार हो गई। अब तो यह आंकड़ा भी बदल चुका होगा! गौरतलब तथ्य यह है कि 1951 से आज तक मुसलमानों की आबादी एक बार भी नहीं घटी, लगातार बढ़ती रही है। अब प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद की एक रपट के जरिए चौंकाने वाले आंकड़े और रुझान सामने आए हैं। रपट में 1950 से 2015 तक जनसंख्या के रुझान के आंकड़े दिए गए हैं। ये इस कालखंड में जनगणना के दौरान भी सामने आए होंगे! तो फिर आर्थिक सलाहकार परिषद की ऐसी रपट तब क्यों सार्वजनिक की गई, जब आम चुनाव, 2024 के तीन चरण के मतदान सम्पन्न हो चुके हैं? लोकसभा की 282 सीटों, करीब 52 फीसदी, पर जनादेश ईवीएम में दर्ज हो चुका है। रपट के मुताबिक, 1950 से 2015 तक की 65 साल की अवधि में बहुसंख्यक हिंदू आबादी 84.68 फीसदी से घट कर 78.6 फीसदी हो गई है, जबकि मुस्लिम आबादी 9.84 से बढ़ कर 14.09 फीसदी हो गई है। हिंदू करीब 8 फीसदी घटे हैं और मुसलमानों की बढ़ोतरी 43.15 फीसदी हुई है। आबादी का यह असंतुलन चुनौतीपूर्ण, खतरनाक, चिंताजनक और विस्फोटक हो सकता है! भारत इंडोनेशिया, मलेशिया, सूडान, सर्बिया आदि देशों में आबादी के असंतुलन के कारण विभाजन देख चुका है। देश दोफाड़ हुए हैं और नए देश बने हैं। इंडोनेशिया कभी हिंदू, बौद्ध बहुल देश था, लेकिन आज दुनिया के सबसे अधिक मुसलमान इंडोनेशिया में ही रहते हैं और बौद्ध अल्पसंख्यक हो गए हैं। भारत में मुसलमान आबादी में वे शामिल नहीं हैं, जो जनगणना जैसे अभियानों का बहिष्कार करते रहे हैं। 65 साल की मुस्लिम आबादी में रोहिंग्या भी शामिल नहीं हैं।

इस लिहाज से मुस्लिम आबादी की बढ़ोतरी अधिक हो सकती है। रपट के मुताबिक, हिंदुओं के साथ-साथ जैन और पारसी की आबादी भी घटी है। मुसलमानों के अलावा सिख, बौद्ध, ईसाई की आबादी बढ़ी है। जैन, पारसी, ईसाई, बौद्ध, सिख समुदाय भी अल्पसंख्यक वर्ग में आते हैं। देश में पारसियों की आबादी तो करीब 57000 बताई जाती है, लेकिन उन्होंने अपने अधिकारों के लिए कभी भी जन-आंदोलन नहीं छेड़े। मुस्लिम आबादी लगातार बढ़ती रही है, इसके बुनियादी कारण बांग्लादेश से घुसपैठ, धर्मान्तरण, मुस्लिम सांसदों, नेताओं द्वारा ज्यादा बच्चे पैदा करने के आह्वान, 'पालन-पोषण तो अल्लाह करेंगे' जैसी सोच, 2011 तक ज्यादा प्रजनन दर, अशिक्षा, अज्ञानता आदि हैं। यह बढ़ोतरी देश की खाद्य सुरक्षा के लिए भी गंभीर चुनौती है। देश के संसाधन कम पड़ सकते हैं। पहले घुसपैठ बांग्लादेश से अधिक हुई, क्योंकि 1971 में पाकिस्तान विभाजन के साथ युद्ध भी हुआ। लोग बांग्लादेश से भाग कर भारत में आए। संघ-भाजपा 2 करोड़ से अधिक ऐसे घुसपैठिए मानते रहे हैं। जब म्यांमार से पलायन शुरू हुआ, तो रोहिंग्या मुसलमानों ने भारत में घुसपैठ की। म्यांमार के बाद भारत में हिंदुओं की आबादी में सर्वाधिक गिरावट हुई है। रपट बताती है कि दुनिया में बहुसंख्यकों की हिस्सेदारी 22 फीसदी घटी है।

राय

चलते सिक्कों के नाम

उम्र की गलियों में जो तसदीक हो गए, वो चिनार अब पतझड़ के लिए ही हैं। राजनीति चलते सिक्कों का नाम है और यही राष्ट्र से प्रदेश तक के चुनावों में देखा जा रहा है। इसी परिप्रेक्ष्य में हिमाचल में लोकसभा से विधानसभा के उपचुनावों में कांग्रेस व भाजपा के उम्मीदवारों के चयन में प्रयास और कयास रहा। संगठन के कारण भाजपा ने अपने सिक्के जल्दी उछाले, जबकि कांग्रेस के लिए उपचुनावों में संगठन की तफतीश हो गई। यही वजह है कि भाजपा ने उपचुनावों में अपना सिक्का जमाने के लिए मूल कांग्रेसियों का भाजपा में अवतरण का महोत्सव बना डाला। बेशक यह दांव मुश्किल व चुनौती से भरा नजर आया, लेकिन भाजपा ने कांग्रेस के कुछ सिक्के छीन कर चुनावी आकाश में उछाल दिए। कम से कम कांग्रेस इन्हें खोटा नहीं कह सकी, भले ही इन्हें बागी कहे या इनके बीच सरगना खोजती रहे। कांग्रेस से छिटक कर भाजपा के उम्मीदवार बने नेताओं ने सियासत का मनोविज्ञान बदला है और इसका असर उनके भविष्य व पार्टियों के परिदृश्य को नए सिरे से पढ़ रहा है। टिकट आबंटन के चक्रब्यूह में भाजपा ने सियासत की शतरंज को भी हैरान किया है, लेकिन कल इसी बिसात पर चुनावी परिणाम की अपनी एक हैसियत होगी। उपचुनाव में एक भी सीट जीतने पर भाजपा की सफलता का परिणाम सोलह प्रतिशत का लाभ देगा। जाहिर है इस हानि का भागीदार वक्त कांग्रेस के लिए महंगा साबित हो सकता है।

इसलिए भाजपा के पास कांग्रेस के सिक्के हैं, तो दूसरी ओर कांग्रेस ने भी भाजपा के दो सिक्के आजमाते हुए डा. राम लाल मार्कंडेय को उछाल कर फेंक दिया। ऐसे में अनुराधा राणा का लाहुल-स्पीति से उम्मीदवार बनना नई करवटों का संगम है। सियासत के शिखर और सियासत के सिफर में अंतर केवल वक्त, विमर्श, वकालत और बगावत का है। हिमाचल में बागी या बगावत न होती, तो छह उपचुनाव या निर्दलयों के इस्तीफे अदालत में न होते। बहरहाल चुनावों की देहरी पर आकर राजनीतिक पार्टियों का व्यवहार असामान्य होने की वजह सत्ता की अंगुलियां चलाने जैसा हो जाता है। ऐसे में हर चुनाव को उम्मीदवारों की ताजगी चाहिए, लेकिन यह असंभव होता जा रहा है। जिस तरह चुनावी पांव से पाजेब लंबी होती जा रही है, उसी तरह कोई भी वरिष्ठ नेता अपनी विरासत नहीं छोडना चाहता। भाजपा ने मार्गदर्शक मंडल बना कर प्रेम कुमार धूमल व शांता कुमार सरीखे नेताओं के योगदान को पिंजरे में बंद कर दिया, लेकिन कांग्रेस अपनी सरकार की काबिलीयत में चंद्र कुमार या धनी राम शांडिल की उम्र पर गौर नहीं करती। इसी संदर्भ में डा. राम लाल मार्कंडेय भी खुद को राजनीतिक उम्र में संभालने के लिए भाजपा से दूर, कांग्रेस से मजबूर होकर अब निर्दलीय होकर जौहर दिखाना चाहते हैं। क्या राजनीति लोकतंत्र के लिए चुनाव का व्यवहार ओढ़ती है या सत्ता के निष्कर्ष में खुद को संभालती है। जो भी हो, हिमाचल इस समय केवल दो राजनीतिक पार्टियों में ही नहीं बंटा, बल्कि जनता के उसूल, सत्ता के कबूल और उम्मीदवारों के रसूख पर भी मत विभाजन होगा। राजनीतिक शिथिलता अगर जनता को पसंद नहीं, तो सत्ता के संघर्ष में नेताओं के प्रदर्शन पर भी वोटों की मंडी बंटी हुई नजर आती है। कमोबेश इन चुनावों में हिमाचल दो सरकारों के बीच कहीं प्रधानमंत्री के आभामंडल से उम्मीद कर रहा है, तो कहीं मुख्यमंत्री की तस्वीर से खुद को नत्थी कर रहा। मुख्यमंत्री की सफलता को प्रमाणित करती नई टीम-नई कांग्रेस अगर जीत के लाभांश में आगे आती है, तो यकीनन इसके संदेश राजनीति का कौल बदल देंगे। दूसरी ओर अगर परिस्थितियों व संभावनाओं के साथ प्रधानमंत्री का जादू भी चल गया, तो भाजपा केंद्र के साथ, हिमाचल के आकार में भी अपने केंद्र बिंदु पर आकर सुखद फैसले ले पाएगी।

भूपिंद्र सिंह

खिलाड़ी तो प्रशिक्षक ही बनाएगा

खेल विभाग व जहां प्रशिक्षक प्रशिक्षण करवा रहा है, वहां उसे सही प्रबंधन देकर प्रशिक्षण कार्यक्रम से जोडना होगा। तभी पहाड़ की संतानों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन का मौका मिलेगा'

ओलंपिक 2036 भारत में आयोजित करवाने की बात हो रही है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि इस स्तर पर भारत का प्रदर्शन भी उत्कृष्ट हो। इसलिए भारत में अच्छे प्रशिक्षकों को सही सुविधा व प्रबंधन देना बहुत ही जरूरी हो जाता है, क्योंकि खिलाड़ी सें उच्च परिणाम केवल प्रशिक्षक ही दिलाता है। आज का अभिभावक खेलों में भी अपने बच्चों का कैरियर देख रहा है क्योंकि खेल आज अपने आप में एक प्रोफैशन है। मानव ने विज्ञान में बहुत प्रगति कर प्रौद्योगिकी व चिकित्सा के क्षेत्र में नए-नए सफल शोध कर जीवनशैली को काफी आसान व सुविधाजनक बना लिया है, मगर शिक्षण व प्रशिक्षण में शिक्षक व प्रशिक्षक की भूमिका का महत्व आज भी वही है जैसा हजारों साल पहले था। महाभारत में कृष्ण सारथी नहीं होते तो क्या अर्जुन भीष्म, कर्ण व अन्य अजेय महारथियों को हरा पाता? विश्व स्तर पर किसी खेल विशेष में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए क्षमतावान प्रशिक्षक का होना बेहद जरूरी होता है। हमारे यहां खेल प्रशिक्षण के लिए वह वातावरण ही नहीं बन पाया है जिसमें प्रशिक्षक खिलाड़ी से राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट परिणाम दिला सके। खेल प्रशिक्षण दस साल से भी अधिक समय तक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। इतनी समय अवधि खेल प्रशिक्षण को देकर ही खिलाड़ी अपने प्रदेश व देश को गौरव दिला पाता है। हिमाचल में लगातार प्रशिक्षण कार्यक्रम का कोई भी प्रावधान अभी तक नहीं बन पाया है।

हिमाचल प्रदेश राज्य युवा सेवाएं एवं खेल विभाग के प्रशिक्षकों को कभी विभिन्न विभागों की भर्तियों में ड्यूटी, तो कभी मेलों व उत्सवों में हाजिरी भरनी पड़ती है। खेल प्रशिक्षक की नियुक्ति ही उच्च खेल परिणामों के लिए की गई होती है, मगर यहां पर प्रशिक्षकों को केवल मल्टीपर्पज कर्मचारी बना दिया गया है। हिमाचल प्रदेश के अधिकतर प्रशिक्षकों का कार्य उच्च खेल प्रशिक्षण से हट कर अपनी फिटनेस तथा सेना में भर्ती कराने तक सीमित हो गया है। हिमाचल प्रदेश के मेलों व उत्सवों में किसी और खेल का प्रशिक्षक किसी और ही खेल की प्ले फील्ड में नजर आता है। इसी तरह पुलिस आदि विभागों की भर्तियों में एथलेटिक्स प्रशिक्षकों की ड्यूटी तो समझ आती है, मगर वहां तो हर खेल के प्रशिक्षक को भेज दिया जाता है। नियमानुसार इन भर्तियों के लिए एथलेटिक्स प्रशिक्षक ही सक्षम है क्योंकि इस टेस्ट में केवल एथलेटिक स्पर्धाओं को ही रखा गया है। ऐसे में एथलेटिक्स प्रशिक्षक की ड्यूटी तो समझ में आती है, मगर वहां अन्य खेलों, जैसे कुश्ती, मुक्केबाजी, हैंडबाल व वॉलीबाल आदि के प्रशिक्षक का क्या औचित्य है, इस बात का उत्तर किसी के भी पास नहीं है। विभिन्न सरकारों ने खेल ढांचे में काफी तरक्की भी की है, मगर क्षमतावान प्रशिक्षकों की नियुक्ति के बारे में हिमाचल में अभी तक कुछ भी नहीं हो पाया है। स्तरीय प्रशिक्षकों के बिना उत्कृष्ट प्रदर्शन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

जो प्रशिक्षक खेल प्रशिक्षण से दूर रह कर मौज-मस्ती कर रहा है, वह तो खुश रहता होगा, मगर जो सच ही में प्रशिक्षण करवा रहा होगा वह जब कई दिनों तक खेल मैदान से दूर रहेगा तो फिर कौन अभिभावक अपने बच्चे को बिना प्रशिक्षक के मैदान में भेजेगा। हद तो तब हो जाती है जब राज्य में चल रहे खेल छात्रावासों में नियुक्त प्रशिक्षकों की ड्यूटी भर्तियों में लगा दी जाती है और खेल छात्रावास में रह रहे खिलाडियों को भी खेल प्रशिक्षण से दूर कर दिया जाता रहा है। क्या प्रतिभा खोज से चयनित इन अति प्रतिभाशाली खिलाडियों को प्रशिक्षक से कुछ समय के लिए ही सही, इस तरह प्रशिक्षण कार्यक्रम से दूर करना कहां तक उचित है? खेल छात्रावासों में नियुक्त प्रशिक्षकों की ड्यूटी खेल प्रशिक्षण के सिवा और कहीं भी नहीं होनी चाहिए। आजकल हर शिक्षित मां-बाप के दो और कई जगह तो एक ही बच्चा है, ऐसे में वह उसे उस क्षेत्र में उच्चतम शिखर तक ले जाना चाहता है जिसमें बच्चे की रुचि व उस क्षेत्र के लिए पर्याप्त प्रतिभा भी हो। आज का अभिभावक अपने बच्चों के कैरियर की खातिर ही सरकार की मुफ्त शिक्षा सुविधाओं को छोडक़र निजी क्षेत्र की महंगी मगर अधिक गुणवत्ता वाली शिक्षा के लिए लाखों रुपए खर्च कर रहा है। आज लाखों प्रतिभाशाली विद्यार्थी निजी कोचिंग संस्थानों में डाक्टर व इंजीनियर बनने इसलिए जमा दो की परीक्षा से कई वर्ष पहले पहुंच रहे हैं।

इसी तरह अब खेल क्षेत्र में भी हो रहा है। अभिभावक अपने बच्चों के लिए खेलों में भी कैरियर तलाश रहा है और इस सब के लिए अच्छी खेल सुविधाओं के साथ-साथ उच्च स्तरीय प्रशिक्षक भी लगातार कई वर्षों तक उसके बच्चों को मिलना चाहिए ताकि वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता बनने का सफर सफलतापूर्वक पूरा कर सकें। इसलिए देश में निजी खेल अकादमियों का चलन भी बढ़ रहा है। गोपीचंद बैडमिंटन अकादमी के विश्व स्तर के परिणाम सबके सामने हैं। यह सब लगातार अच्छे प्रशिक्षण कार्यक्रम का ही नतीजा है। इस समय विभिन्न खेलों के लिए देश में निजी स्तर पर कई अकादमियां शुरू हो चुकी हैं। इन खेल अकादमियों को अधिकतर पूर्व ओलंपियन चला रहे हैं और यहां से अच्छे खेल परिणाम भी मिल रहे हैं। इन अकादमियों में जो विशेष है, वह यह है कि यहां उच्च क्षमता वाला प्रशिक्षक लगातार उपलब्ध है।

हिमाचल प्रदेश के पास आज विभिन्न खेलों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्ले फील्ड तैयार हैं। वहां पर या तो प्रशिक्षक हैं ही नहीं और जहां हैं भी वे या तो प्रशिक्षण से बेरुख हैं या उनमें अच्छे स्तर के खेल परिणाम दिलाने की क्षमता ही नहीं है। क्या हिमाचल सरकार पंजाब, गुजरात आदि राज्यों की तरह उत्कृष्ट खेल परिणाम दिलाने वाले बढिया प्रशिक्षकों को यहां लगातार कई वर्षों के लिए अनुबंधित कर प्रदेश के खिलाडियों को राज्य में ही प्रशिक्षण सुविधा दिला कर खेल प्रतिभा का पलायन रोक नहीं सकती है। इससे प्रदेश में खेल वातावरण बनेगा तो हर खेल प्रशिक्षक प्रेरित होकर चाहेगा कि उसके शिष्य भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करें। इस सबके लिए खेल विभाग व जहां प्रशिक्षक प्रशिक्षण करवा रहा है, वहां उसे सही प्रबंधन देकर प्रशिक्षण कार्यक्रम से जोडना होगा। तभी पहाड़ की संतानों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के सही मौके मिलेंगे। सही प्रशिक्षण के बिना अच्छे परिणाम नहीं मिलेंगे।

पूरन सरमा

लेकिन पुरस्कार ले लो'

मुझे विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि कुछ संस्थाएं मुझे पुरस्कृत करने का षड्यंत्र कर रही हैं। उनके एक-दो जासूस मेरा मन टटोलने को मेरे पास आए भी थे और कहा कि इस बार मैं ले लूं उनका पुरस्कार। लेकिन मैंने साफ मना कर दिया कि मुझे पुरस्कार नहीं लेना है। दरअसल पुरस्कार लेते हुए मुझे डर लगने लगा है। पुरस्कार लेने का मतलब गरीबी में आटा गीला करने के समान है। उनके पुरस्कार से तो बिना पुरस्कार के ही अच्छे हैं। लेकिन उनका दबाव है कि वे पुरस्कार मुझे कम लागत में दिला देंगे। यानी मालाएं व मंच उनका तथा सम्मान राशि एवं जलपान का खर्चा मेरा। मैंने कहा कि मेरे पास इस समय पैसा नहीं है। इस तरह फिलहाल मैंने टाल दिया है उनको। एक दूसरी संस्था के पदाधिकारी आए और बोले- 'ऐसा करो सारी व्यवस्था हमारी, लेकिन सम्मान राशि कार्यक्रम के बाद हमें लौटानी पड़ेगी।' मैं बोला- 'फिर ऐसे सम्मानित होने से क्या फायदा?' वे बोले- 'अखबारों में आपके सम्मानित होने की खबरें छपेंगी तथा समाज में सम्मान बढ़ेगा।'

मैं बोला- 'सम्मान से क्या होता है। मुझे पैसा चाहिए। मैंने साहित्य की सेवा की है। मेरी कोई पहचान भी है तो मुझे सम्मान राशि भी दीजिए।' वे बोले- 'आपकी बात तो सही है, लेकिन हमारी संस्था आर्थिक विषमता से जूझ रही है। पैसा दे नहीं सकती। आप ख्यातिप्राप्त हैं। हमारा वार्षिक आयोजन हो रहा है। हम किसी ऐसे गैरे नत्थू खैरे को सम्मानित नहीं करना चाहते। सम्मान की गरिमा बनाए रखना भी तो जरूरी है।' मैंने कहा- 'जब मैं ख्याति प्राप्त कर चुका हूं तो मैं सम्मान राशि भी प्राप्त करना चाहूंगा। दरअसल मुझे पैसों की आवश्यकता भी है।' संस्था के पदाधिकारी बोले- 'तो फिर ऐसा करो, आधी राशि आप मिला दें। आधी हम दे देंगे-लेकिन पुरस्कार ले लो।' मैं बोला- 'देखो मुझे झांसे में मत लो। मुझे कोई पुरस्कार नहीं लेना। ऐसा पुरस्कार लेकर मुझे करना क्या है?' 'आप तो खामख्वाह जिद कर रहे हैं। आपसे पहले तो किसी ने पुरस्कार के लिए मना नहीं किया। हमने जो चैक दिया, वह हमें ही वादे के अनुसार वापस कर गए थे। विशाल सभागार में तालियों की गडग़ड़ाहट के मध्य आपको कोई ग्रामीण विकास मंत्री फूलों के हार पहनाएगा, यह कोई कम बात नहीं है।' वे बोले। मैंने कहा- 'देखो इस समय मैं आपका यह पुरस्कार लेने की स्थिति में नहीं हूं। किसी और को पकड़ो। इस महीने मेरे खर्चे बहुत हो गए हैं।'

वे बोले- 'खर्चे की छोड़ो, आप थोड़ा चर्चे पर ध्यान दें तो हमारी समस्या का हल निकल जाए। हमारा निर्णायक मंडल आपके नाम पर सहमति जता चुका है। अब हम निर्णय से कैसे हट सकते हैं?' 'देखिए, यह आपकी समस्या है, मैं स्पष्ट बता दूं कि मुझे आपका पुरस्कार नहीं लेना है। पुरस्कार पूरे मान-सम्मान से राशि सहित मिले तो विचार कर सकता हूं।' मैंने कहा। इस बार वे गुस्से में तमतमाए और आंखें लाल करके बोले- 'पुरस्कार तो आपको लेना पड़ेगा। हम आपको इतनी सस्ती दरों पर यह मुहैया करवा रहे हैं और आप इंकार कर रहे हैं। हमारे पास तीन सौ छत्तीस आते हैं पुरस्कार लेने वाले, लेकिन हमने तो आपको अपना समझ कर दिलवाया है।

इनसाइड

मार्च में औद्योगिक उत्पादन 4.9 प्रतिशत की दर से बढ़ा, इस सेक्टर में हुआ अच्छा इजाफा

नई दिल्ली। खनन क्षेत्र के खराब प्रदर्शन के चलते मार्च में घरेलू औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि दर मासिक आधार पर 4.9 प्रतिशत रही है, जो इसी वर्ष फरवरी में 5.6 प्रतिशत थी। मार्च 2023 के दौरान औद्योगिक उत्पाजन की दर 1.9 प्रतिशत थी। सांख्यिकीय मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, पूरे वित्त वर्ष के दौरान औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि दर 5.8 प्रतिशत रही है जो इससे पिछले वित्त वर्ष के दौरान 5.2 प्रतिशत थी।

आंकड़ों के अनुसार, मार्च में खनन क्षेत्र की वृद्धि दर घटकर 1.2 प्रतिशत रही है जो पिछले वर्ष समान अवधि में 6.8 प्रतिशत थी। मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र की वृद्धि दर 5.2 प्रतिशत रही है जो पिछले वर्ष मार्च में 1.5 प्रतिशत थी। पिछले महीने बिजली उत्पादन में 8.6 प्रतिशत और कंज्यूमर ड्यूरेबल्स क्षेत्र में 9.5 प्रतिशत की वृद्धि रही है। कैपिटल गुड्स क्षेत्र की वृद्धि दर घटकर 6.1 प्रतिशत रही है जो पिछले वर्ष मार्च में 10 प्रतिशत थी।

मार्च 2023 में 1.9 प्रतिशत के संकुचन की तुलना में महीने के दौरान उपभोक्ता गैर-टिकाऊ वस्तुओं का उत्पादन 4.9 प्रतिशत बढ़ गया। आंकड़ों के अनुसार, बुनियादी ढांचे/निर्माण वस्तुओं ने मार्च 2024 में 6.9 की वृद्धि दर्ज की, जबकि एक साल पहले की अवधि में 7.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी।

पूरी दुनिया में फेल, भारत में कैसे सफल हुए 10 मिनट में सामान पहुंचाने वाले डिलीवरी प्लेटफॉर्म?

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में क्विक कॉमर्स का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। खासकर नौजवान उपभोक्ताओं के बीच इनकी लोकप्रियता एक अलग ही लेवल पर पहुंच गई है। वे अपनी जरूरत का हर छोटा-बड़ा सामान यहां से मंगा रहे हैं। सबसे दिलचस्प बात यह है कि क्विक कॉमर्स दुनिया के बाकी देशों में ज्यादा सफल नहीं रहा। लेकिन भारत में इसकी कामयाबी मिसाल बन गई है। आइए जानते हैं इसकी वजह।

नई दिल्ली। आपका ऑफिस जाने से पहले ब्रेड के साथ चाय पीने का मन है। किचन पहुंचे, तो देखा कि चायपत्ती और ब्रेड दोनों खत्म। आपने फोन निकाला और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर ऑर्डर प्लेस करके बाथरूम में नहाने चले गए। आपके नहाकर निकलने से पहले ही दरवाजे पर दस्तक हो सकती है, सर... आपका ऑर्डर।

यह जादू है क्विक कॉमर्स का। इसमें आपकी जरूरत का सामान काफी कम समय में आपके पास पहुंच जाता है। अमूमन आधे घंटे से पहले। इस सर्विस ने शहरी डिजिटल उपभोक्ताओं के बीच अपनी गहरी पैठ बना ली है, उनकी जिंदगी का अहम हिस्सा बन गया है। अब क्विक कॉमर्स कंपनियों की नजर छोटे शहरों औ कस्बों में रहने वाले उपभोक्ताओं पर है।

क्विक कॉमर्स की बड़ी कंपनियां?

फिलहाल क्विक कॉमर्स सेगमेंट में तीन बड़े खिलाड़ी हैं। जोमैटो का ब्लिंकइट, स्विगी का इंस्टामार्ट और जेप्टो। ये सभी एकदूसरे से आगे निकलने की होड़ में हैं, क्योंकि अभी इनके मार्केट शेयर में कोई बड़ा अंतर नहीं है।

समाचार एजेंसी आईएएनएस ने इंडस्ट्री एक्सपर्ट के हवाले से बताया कि क्विक ग्रॉसरी कॉमर्स के दुनिया के अन्य देशों में काफी कम सफल रहे, लेकिन भारत में वे कामयाबी की नई इबारत लिख रहे हैं।

हालांकि, पाकिस्तान में क्विक कॉमर्स कुछ हद तक सफल रहा। वहां किराने के सामान की इंस्टैंट डिलीवरी करने वाला एयरलिफ्ट एक्सप्रेस देश का पहला यूनिकॉर्न बनने की भी कगार था। लेकिन, वह भी जल्द ही बर्बाद हो गया।

भारत में क्यों सफल हुए क्विक कॉमर्स?

एमके ग्लोबल फाइनेंशियल सर्विसेज की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में जनसंख्या घनत्व काफी अधिक है। साथ ही, गली-गली में किराना स्टोरों की भी भरमार है। ऐसे में ब्लिंकइट और जेप्टो जैसी कंपनियों को काफी कम लागत में अपनी सेवाएं उपलब्ध कराने का मौका मिल जाता है।

युवा पीढ़ी (GenZ) हर रोज अपने जरूरत का सामान ऑनलाइन मंगा रही है। शुरुआत में ये प्लेटफॉर्म सिर्फ किराने का सामान डिलीवर करते थे। लेकिन, जल्द ही अपना दायरा सभी सेगमेंट तक फैला लिया। इसमें आटा-दाल से लेकर सब्जियां और साबुन-शैंपू के साथ शेविंग प्रोडक्ट्स तक शामिल हैं।

ग्राहक को क्विक कॉमर्स से सामान मंगाने में सहूलियत हो रही है। यहां कई बार मार्केट रेट से कम में चीजें मिल जाती हैं। आपको मार्केट भी जाना पड़ता। इससे आपका वक्त बचता है और आपको सामान भी अपने दरवाजे पर मिल जाता है।

क्विक कॉमर्स की बढ़ती वैल्यू

ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म जोमैटो ने इंस्टैंट ग्रोसरी डिलीवरी करने वाली ब्लिंकइट (Zomato-Blinkit Deal) को 2022 में करीब साढ़े 4 हजार करोड़ रुपये में खरीद था, जो पहले ग्रोफर्स के नाम से जाना जाता था। प्रतिष्ठित ब्रोकरेज गोल्डमैन सैक्स के मुताबिक, जोमैटो की कुल कमाई में उसके फूड डिलीवरी बिजनेस का कम, क्विक कॉमर्स की हिस्सेदारी अधिक है।

ब्लिंकइट के पास हाई SKU (स्टॉक कीपिंग यूनिट) की उपलब्धता है। उसका ऑर्डर फुलफिलमेंट रेट भी बेहतर है। उसके पास ग्राहकों का ज्यादा डेटा भी है। अपनी शानदार सर्विस की बदौलत उसका एवरेज ऑर्डर वैल्यू (AOV) इंडस्ट्री में सबसे अधिक है। इससे जोमैटो को अपना मुनाफा बढ़ाने में भी मदद मिली है।

डार्क स्टोर बढ़ा रहीं कंपनियां

क्विक कॉमर्स कंपनियां अपने डार्क स्टोर की संख्या लगातार बढ़ा रही हैं। डार्क स्टोर दरअसल कंपनियों के गोदाम की तरह होते हैं। यहां कंपनियां अपने प्रोडक्ट को स्टोर करती हैं, लेकिन आप यहां सीधे जाकर खरीदारी नहीं कर सकते। आपको ऑनलाइन ही ऑर्डर प्लेस करना होगा। फिर कंपनी उसकी डिलीवरी आपके बताए पते पर कर देगी।

कितना बड़ा है क्विक कॉमर्स मार्केट?

मार्केट इंटेलिजेंस फर्म रेडसीर की रिपोर्ट बताती है कि भारत का क्विक कॉमर्स मार्केट तेजी से बढ़ रहा है। यह पिछले साल ग्रॉस मर्चेंडाइज वैल्यू (GMV) के मामले में सालाना आधार पर 77 फीसदी बढ़कर 2.8 अरब डॉलर तक पहुंच गया है।

बीते वित्त वर्ष में सोना आयात 30 प्रतिशत बढ़ा

डाटा के अनुसार बीते वित्त वर्ष में भारत ने स्विट्जरलैंड से सबसे ज्यादा 40 प्रतिशत सोना आयात किया है। इसके बाद 16 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ संयुक्त अरब अमीरात और 10 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ दक्षिण अफ्रीका रहा है। देश के कुल आयात में सोने की पांच प्रतिशत से ज्यादा हिस्सेदारी रही है। इस समय सोने पर 15 प्रतिशत आयात शुल्क लग रहा है।

नई दिल्ली। मजबूत घरेलू मांग के चलते बीते वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान देश का सोना आयात 30 प्रतिशत बढ़कर 45.54 अरब डॉलर रहा है। वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान भारत का सोना आयात 35 अरब डॉलर रहा था। वाणिज्य मंत्रालय के डाटा के अनुसार, इस वर्ष मार्च में सोने का आयात 53.56 प्रतिशत घटकर 1.53 अरब डालर रहा है। इस दौरान चांदी का आयात भी 2.72 प्रतिशत बढ़कर 5.4 अरब डॉलर रहा है।

स्विट्जरलैंड से सबसे ज्यादा सोना आयात

डाटा के अनुसार, बीते वित्त वर्ष में भारत ने स्विट्जरलैंड से सबसे ज्यादा 40 प्रतिशत सोना आयात किया है। इसके बाद 16 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ संयुक्त अरब अमीरात और 10 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ दक्षिण अफ्रीका रहा है। देश के कुल आयात में सोने की पांच प्रतिशत से ज्यादा हिस्सेदारी रही है। इस समय सोने पर 15 प्रतिशत आयात शुल्क लग रहा है।

भारत में सोने की मुख्य मांग ज्वेलरी उद्योग से आती है

सोने का आयात बढ़ने के बावजूद बीते वित्त वर्ष में भारत का कारोबारी घाटा (निर्यात और आयात के बीच का अंतर) 240.18 अरब डॉलर रहा है जो 2022-23 में 265 अरब डॉलर था। चीन के बाद भारत सोने का दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है। भारत में सोने की मुख्य मांग ज्वेलरी उद्योग से आती है। 2023-24 के दौरान जेम्स एंड ज्वेलरी निर्यात 14 प्रतिशत घटकर 32.7 अरब डॉलर रहा है।

2026 तक तीसरा बड़ा उपभोक्ता बाजार होगा भारत, पहले जर्मनी और फिर जापान हो जाएंगे पीछे

यह रिपोर्ट ऐसे समय में आई है जब भारत के उपभोक्ता बाजार में लगातार मजबूत वृद्धि दर्ज की जा रही है। रिपोर्ट में यूरोमॉनिटर के डाटा के हवाले से कहा गया है कि 2023 में भारत में करीब चार करोड़ लोग समृद्ध वर्ग में शामिल थे जिनकी वार्षिक आय 10 हजार डॉलर (आज की दर से करीब 8.35 लाख रुपये) से अधिक थी।

नई दिल्ली। वित्तीय सेवा फर्म यूबीएस ने अपनी ताजा रिपोर्ट में कहा है कि भारत एक वैश्विक आर्थिक महाशक्ति के रूप में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए तैयार है। यह 2026 तक दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार बन जाएगा। यूबीएस ने अपनी 'इंडिया इकोनॉमिक पर्सपेक्टिव्स' रिपोर्ट में कहा है कि चुनौतियों के बावजूद भारत के उपभोक्ता बाजार ने पिछले एक दशक के दौरान उल्लेखनीय लचीलापन और वृद्धि दिखाई है।

रिपोर्ट के अनुसार, उपभोक्ता बाजार के मामले में भारत 2024 तक जर्मनी और 2026 तक जापान को पीछे छोड़ देगा। साथ ही वैश्विक आर्थिक महाशक्ति के रूप में अपनी स्थिति मजबूत कर लेगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि बड़ी आबादी और बढ़ते मध्यम वर्ग से भारत की तीव्र प्रगति को मदद मिल रही है। 2023 में भारत की घरेलू खपत 2.1 ट्रिलियन डॉलर रही है, जो पिछले दशक से लगभग दोगुनी है। यह 7.2 प्रतिशत की वार्षिक चक्रवृद्धि दर के साथ बढ़ी है। यह विकास दर चीन, अमेरिका और जर्मनी जैसी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं से ज्यादा है।

लगातार बढ़ रहा भारत का उपभोक्ता बाजार

यह रिपोर्ट ऐसे समय में आई है जब भारत के उपभोक्ता बाजार में लगातार मजबूत वृद्धि दर्ज की जा रही है। रिपोर्ट में यूरोमॉनिटर के डाटा के हवाले से कहा गया है कि 2023 में भारत में करीब चार करोड़ लोग समृद्ध वर्ग में शामिल थे, जिनकी वार्षिक आय 10 हजार डॉलर (आज की दर से करीब 8.35 लाख रुपये) से अधिक थी। यह 15 वर्ष या इससे अधिक आयु की कुल आबादी का चार प्रतिशत था। अनुमानों से संकेत मिलता है कि यह आंकड़ा अगले पांच वर्षों में दोगुना से अधिक हो जाएगा, जो भारतीयों के बीच क्रय शक्ति के महत्वपूर्ण विस्तार का संकेत देता है।

नीतिगत पहलों ने भारत का आकर्षण बढ़ाया

भारत का बड़ा घरेलू बाजार मैन्युफैक्चरिंग की खपत में सक्षम है जो इसे अपने एशियाई प्रतिस्पर्धियों पर बढ़त देता है। इसके अतिरिक्त नीतिगत पहलों और संरचनात्मक सुधारों ने उपभोक्ता बाजार के रूप में भारत के आकर्षण को और बढ़ाया है। हालांकि, विश्लेषक लंबी अवधि में उपभोग वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए निरंतर उच्च गुणवत्ता वाले रोजगार सृजन की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

कंपनी को हुआ मुनाफा तो भर दी निवेशकों की झोली, शेयरधारकों को मिला डबल डिविडेंड

नई दिल्ली। स्टॉक मार्केट बंद होने के बाद टाटा ग्रुप (Tata Group) की ऑटोमोबाइल कंपनी टाटा मोटर्स (TATA MOTORS) ने पिछले कारोबारी साल के तिमाही नतीजे जारी किये। कंपनी ने बताया कि सालाना आधार पर कंपनी के मुनाफे में शानदार तेजी आई है। कंपनी ने अपनी परफॉर्मेंस के साथ निवेशकों के लिए लाभांश की भी घोषणा की।

कैसे रही कंपनी की परफॉर्मेंस (TATA MOTORS Q4 Result)

- टाटा मोटर्स ने बताया कि 31 मार्च, 2024 को समाप्त चौथी तिमाही में कंसोलिडेट प्रॉफिट तीन गुना से अधिक हुआ है। मार्च तिमाही में कंपनी का समेकित लाभ17,528.59 करोड़ रुपये रहा। कंपनी ने नियामक फाइलिंग में कहा कि पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 5,496.04 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया था।
- कंपनी का ऑपरेशन रेवेन्यू 1,19,986.31 करोड़ रुपये रहा, जबकि एक साल पहले की अवधि में यह 1,05,932.35 करोड़ रुपये था।
- टाटा मोटर्स ने बताया कि इस तिमाही कंपनी का रेवेन्यू 7.9 बिलियन पाउंड था। यह वित्त वर्ष की तुलना में 11 फीसदी ज्यादा है।

टाटा कैपिटल समेत 15 NBFC ने अपना लाइसेंस RBI को लौटाया, जानिए क्या है वजह

रिजर्व बैंक (RBI) ने शुक्रवार को बताया कि 15 नॉन-बैंकिंग फाइनेंस कंपनीज (NBFC) ने अपने रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट को सरेंडर कर दिया है यानी वापस लौटा दिया है। इनमें टाटा ग्रुप की टाटा कैपिटल फाइनेंशियल सर्विसेज और रिवॉल्विंग इन्वेस्टमेंट्स भी शामिल हैं। इन सभी के सर्टिफिकेट लौटाने की अलग-अलग वजहें हैं। आइए जानते हैं कि इन NBFC ने अपना लाइसेंस क्यों सरेंडर किया।

नई दिल्ली। रिजर्व बैंक (RBI) ने शुक्रवार को बताया कि 15 नॉन-बैंकिंग फाइनेंस कंपनीज (NBFC) ने अपने रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट सरेंडर कर दिया है यानी वापस लौटा दिया है। इनमें टाटा कैपिटल फाइनेंशियल सर्विसेज और रिवॉल्विंग इन्वेस्टमेंट्स भी शामिल हैं। इन सभी के सर्टिफिकेट लौटाने की अलग-अलग वजहें हैं।

क्या है सर्टिफिकेट सरेंडर की वजह

9 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (NBFC) विलय या विघटन जैसी वजहों के चलते कानूनी संस्थाएं नहीं रह गईं। इनमें से कुछ ने गठन के बाद एक साल या इससे अधिक वक्त बिजनेस शुरू नहीं किया यानी ये NBFC निष्क्रिय कंपनियों की श्रेणी में आ गईं।

इनमें टाटा कैपिटल फाइनेंशियल सर्विसेज, टाटा क्लीनटेक कैपिटल, नेपेरोल इन्वेस्टमेंट्स, यूएसजी फाइनेंशियल सर्विसेज, ऊर्जा कैपिटल, वंदना डीलर्स, एबीआरएन फाइनेंस, जोधानी मैनेजमेंट और जेडीएस सिक्योरिटीज शामिल हैं।

6 कंपनियों ने बिजनेस छोड़ा

रिजर्व बैंक ने बताया कि छह कंपनियों ने अपनी मर्जी से बिजनेस बंद करना फैसला किया है। ये नॉन-बैंकिंग फाइनेंशियल इंस्टीट्यूशन (NBFI) बिजनेस से बाहर हो गईं और अपना रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट सरेंडर कर दिया।

इनमें वियान ग्रोथ कैपिटल, ड्रेप लीजिंग एंड फाइनेंस, ज्वेल स्ट्रिप्स, रिवॉल्विंग इन्वेस्टमेंट्स, अंशू लीजिंग और ए वी बी फाइनेंस शामिल हैं। इन सभी कंपनियों को सर्टिफिकेट रिजर्व बैंक ने दिए थे।

आरबीआई के प्रस्तावित नियम

पिछले दिनों बैंकिंग रेगुलेटर रिजर्व बैंक (RBI) ने वित्तीय संस्थानों के लिए ड्राफ्ट गाइडलाइंस जारी की थी। इसमें प्रस्ताव है कि इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट को लोन देने वाले वित्तीय संस्थानों को लोन का 5 प्रतिशत प्रोविजिनिंग के तौर पर रखना होगा। हालांकि, प्रोजेक्ट के शुरू बाद होने के बाद इसे कम करके 1 प्रतिशत तक लाया जा सकेगा।

पांच साल में 1.7 लाख करोड़ का निवेश करेगी BPCL, शेयरों पर दिख सकता है असर

सार्वजनिक क्षेत्र की तेल वितरण कंपनी भारत पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड (BPCL) अगले पांच वर्षों के दौरान कारोबार विस्तार पर 1.7 लाख करोड़ रुपये का निवेश करेगी। इसे ऑयल रिफाइनिंग मार्केटिंग और पेट्रोकेमिकल कारोबार के विस्तार के साथ हाइड्रोजन जैसी स्वच्छ ऊर्जा पर किया जाएगा। BPCL के शेयर 4.50 फीसदी उछाल के साथ 618.80 रुपये पर बंद हुए। सरकारी कंपनी के तिमाही नतीजों से उत्साहित निवेशकों ने जमकर खरीदारी की।

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल वितरण कंपनी भारत पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) अगले पांच वर्षों के दौरान कारोबार विस्तार पर 1.7 लाख करोड़ रुपये का निवेश करेगी। कंपनी के चेयरमैन जी कृष्णकुमार ने शुक्रवार का कहा कि यह निवेश ऑयल रिफाइनिंग, मार्केटिंग और पेट्रोकेमिकल कारोबार के विस्तार के साथ हाइड्रोजन जैसी स्वच्छ ऊर्जा पर किया जाएगा।

वित्तीय नजीजे पेश किए जाने के बाद विश्लेषकों के साथ बातचीत में कृष्णकुमार ने कहा कि इस निवेश से तेल की मांग को पूरा करने के साथ 2040 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य को हासिल करने में भी मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि 75 हजार करोड़ रुपये रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल्स, आठ हजार करोड़ रुपये रणनीतिक पाइपलाइन परियोजनाओं और 20 हजार करोड़ रुपये का निवेश विपणन कारोबार में होगा। इसके अलावा अपस्ट्रीम उत्पादन पर 32 हजार करोड़, गैस कारोबार पर 25 हजार करोड़ और ग्रीन एनर्जी पर 10 हजार करोड़ का निवेश होगा।

BPCL का रिजल्ट

मार्च तिमाही के दौरान BPCL ने 9213 करोड़ Ebitda रिपोर्ट किया है। इस दौरान कंपनी का मार्जिन 7.9 फीसदी रहा। स्टैंडअलोन नेट प्रॉफिट गिर करके 4,224 करोड़ रुपये रिपोर्ट हुआ। यह एक साल पहले 6,478 करोड़ रुपये था। कंपनी के बोर्ड मेंबर ने 1:1 रेश्यो में बोनस शेयर इश्यू करने का अप्रूवल भी दिया है।

BPCL शेयरों का हाल

BPCL के शेयर शुक्रवार (10 मई) को 4.50 फीसदी उछाल के साथ 618.80 रुपये पर बंद हुए। सरकारी कंपनी के तिमाही नतीजों से उत्साहित निवेशकों ने जमकर खरीदारी की। BPCL ने पिछले 6 महीने में 60 फीसदी का रिटर्न दिया है। वहीं, पिछले एक साल के दौरान निवेशकों को कंपनी से 66 फीसदी का मुनाफा हुआ है।

अगर BPCL के 52 हफ्ते के हाई की बात करें, तो यह 687.95 रुपये है। वहीं, लो 331.45 रुपये है। BPCL का मार्केट कैप 1.34 लाख करोड़ रुपये है और पीई रेशियो 4.55 है।

एयर इंडिया एक्सप्रेस की 75 और उड़ानें रद्द, कंपनी को अब तक 30 करोड़ के राजस्व का नुकसान

टाटा समूह की यह एयरलाइन प्रतिदिन 380 उड़ानें संचालित करती है। औसतन एयरलाइन प्रतिदिन 120 अंतरराष्ट्रीय और 260 घरेलू उड़ानों का संचालन करती है। सुलह वार्ता के बाद एयरलाइन ने छुट्टी पर गए 25 क्रू मेंबर्स को जारी बर्खास्तगी पत्र भी वापस ले लिए हैं। एक अन्य अधिकारी ने बताया कि छुट्टी पर गए क्रू मेंबर्स ने वापस ड्यूटी पर आना शुरू कर दिया है।

नई दिल्ली। केबिन क्रू की कमी की वजह से एयर इंडिया एक्सप्रेस (Air India Express) को शुक्रवार को भी अपनी लगभग 75 उड़ानें रद्द करनी पड़ीं। एयरलाइन ने रविवार तक परिचालन सामान्य हो जाने की उम्मीद जताई है। कथित कुप्रबंधन के कारण मंगलवार शाम से बीमारी की सूचना देकर छुट्टी ले रहे केबिन क्रू के एक वर्ग ने गुरुवार को प्रबंधन के साथ वार्ता के बाद काम पर लौटने का निर्णय लिया है।

एक अधिकारी ने बताया कि उड़ानों के रद्द होने और यात्रियों को मुआवजे की वजह से एयरलाइन को लगभग 30 करोड़ रुपये के राजस्व का नुकसान हुआ है। केबिन क्रू के एक वर्ग के एक साथ छुट्टी पर जाने की वजह से मंगलवार रात से गुरुवार शाम तक एयर इंडिया एक्सप्रेस को अपनी 170 से अधिक उड़ानें रद्द करनी पड़ीं। शनिवार को भी 45 से 50 उड़ानें रद्द होने की आशंका है।

टाटा समूह की यह एयरलाइन प्रतिदिन 380 उड़ानें संचालित करती है। औसतन एयरलाइन प्रतिदिन 120 अंतरराष्ट्रीय और 260 घरेलू उड़ानों का संचालन करती है। सुलह वार्ता के बाद एयरलाइन ने छुट्टी पर गए 25 क्रू मेंबर्स को जारी बर्खास्तगी पत्र भी वापस ले लिए हैं। एक अन्य अधिकारी ने बताया कि छुट्टी पर गए क्रू मेंबर्स ने वापस ड्यूटी पर आना शुरू कर दिया है और एयरलाइन उनका मेडिकल चेकअप कराकर एवं फिटनेस सार्टिफिकेट हासिल कर उनकी मदद कर रही है। ड्यूटी पर वापस आने के लिए फिटनेस सर्टिफिकेट आवश्यक है।

अधिकारी ने यह भी बताया कि अधिकतर अंतरराष्ट्रीय उड़ानें शाम को होती हैं, लिहाजा इन उड़ानों का परिचालन अधिक से अधिक केबिन क्रू मेंबर्स की उपलब्धता की वजह से बेहतर होना शुरू हो गया है।

गौरतलब है कि एयर इंडिया एक्सप्रेस में लगभग छह हजार कर्मचारी हैं जिनमें दो हजार से अधिक केबिन क्रू हैं। एयरलाइन के पास 73 विमानों का बेड़ा है। वर्तमान में एयर इंडिया एक्सप्रेस और एआइएक्स कनेक्ट (पूर्व में एयरएशिया इंडिया) के विलय की प्रक्रिया चल रही है।

इलेक्ट्रिक वाहन से जाएंगे मतदान करने, तो मिलेंगी ये सहूलियतें, जानें

गुरुग्राम मतदान केंद्रों पर इलेक्ट्रिक वाहनों से आने वाले मतदाताओं को प्राथमिकता मिलेगी। जानें गुरुग्राम जिला प्रशासन ने क्या योजनाएं बनाई हैं।

गुरुग्राम। प्रशासन ने शहर के मतदान केंद्रों पर कम से कम सात ₹ग्रीन बूथ₹ स्थापित करने की योजना बनाई है। ताकि इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) के मालिक लंबी कतारों में इंतजार किए बिना मतदान कर सकें। प्रशासन ने पर्यावरण को लेकर जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए यह कदम उठाया है।

प्रशासन ने कहा कि ईवी में आने वालों को निशुल्क चार्जिंग स्टेशन के साथ विशेष पार्किंग स्थल मिलेंगे। यह आदेश एक ही ईवी में आने वाले परिवारों तक भी लागू होता है। लेकिन यह तुरंत स्पष्ट नहीं हुआ कि यह एक से ज्यादा लोगों के साथ ईवी से यात्रा करने वालों पर लागू होता है या नहीं।

गुरुग्राम के उपायुक्त निशांत कुमार यादव ने कहा कि प्रशासन लोगों को ईवी का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। और पूरे शहर में और ज्यादा चार्जिंग स्टेशन लगाने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने कहा, ₹हमारी टीम मतदाताओं और उनके वाहनों की आवाजाही पर नजर रखेगी। ईवी मालिकों को अपना पंजीकरण प्रमाणपत्र साथ रखने की जरूरत है। जरूरी नहीं कि हार्ड कॉपी हो, सॉफ्ट कॉपी भी यह लाभ उठाने के लिए मान्य होगी।₹

यादव ने बताया कि ग्रीन बूथ में सौर पैनलों जैसी टिकाऊ तकनीकों का भी प्रदर्शन किया जाएगा। उन्होंने कहा, ₹मतदान केंद्रों पर तैनात वॉलन्टियर्स उन्हें अपने ईवी को पार्क करने में मदद करेंगे और उनके लिए विशेष सेल्फी पॉइंट बनाए गए हैं। इसके अलावा, ईवी को इन बूथों पर तैनात किया जाएगा, जिससे मतदाताओं को पहली बार टिकाऊ परिवहन विकल्पों को देखने का मौका मिलेगा।

उन्होंने कहा, "बूथों के ऊपर लगे सौर पैनल स्वच्छ, नवीकरणीय ऊर्जा पैदा करेंगे, पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता कम करेंगे और कार्बन उत्सर्जन को कम करेंगे।" अधिकारियों ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के स्वयंसेवकों और राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के कैडेटों को 25 मई को चुनाव ड्यूटी के लिए शामिल किया गया है। जो हरियाणा में पहली बार है।

यादव ने कहा कि उन्हें अगले सप्ताह विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने कहा, ₹मतदान केंद्रों के बाहर स्वयंसेवक सुविधा से समझौता किए बिना अनुशासन बनाए रखेंगे। वे बुजुर्ग और दिव्यांग मतदाताओं को बूथ के प्रवेश द्वार तक पहुंचने में भी मदद करेंगे। वे बूथ के बाहर उपलब्ध अल्फाबेटिक इलेक्टोरल रोल (वर्णानुक्रमिक निर्वाचक नामावली) लोकेटरों में अपना नाम जांचकर अन्य मतदाताओं की मदद करेंगे।"

शहर में चार गुलाबी मतदान केंद्र बनाए जाएंगे। गुलाबी मतदान केंद्रों का प्रबंधन पूरी तरह से महिलाओं द्वारा किया जाएगा। इन बूथों पर गर्भवती महिलाओं के लिए विशेष व्यवस्था की जाएगी। इसके अलावा, चार युवा-प्रबंधित मतदान केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

इसके अलावा, जिला प्रशासन ने आगामी चुनावों में मतदान बढ़ाने के लिए मतदान करने वालों को छूट प्रदान करने के लिए विभिन्न मल्टीप्लेक्स चेन के सहयोग से एक अभियान शुरू किया है। अधिकारियों ने कहा कि मतदाता जागरूकता अभियान इस सप्ताह के आखिर से 10 मल्टीप्लेक्स चेन के 90 स्क्रीनों पर प्रदर्शित किए जाएंगे।

यादव ने कहा कि अगर कोई मतदाता 25 मई को मतदान के बाद मल्टीप्लेक्स में अपनी उंगली पर अमिट स्याही का निशान दिखाता है। तो उन्हें काउंटर से ऑफलाइन टिकट और सिनेमा हॉल में रिफ्रेशमेंट पर छूट मिलेगी।

यादव ने कहा कि कुछ मल्टीप्लेक्स निःशुल्क रिफ्रेशमेंट भी प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा, "मल्टीप्लेक्स चेन ने गुरुग्राम जिला प्रशासन की पहल का समर्थन किया है।₹ अधिकारियों ने कहा कि यह ऑफर शहर के पीवीआर, आईनॉक्स, सिनेपोलिस, वेव, मिराज और सिनेपोलिस मल्टीप्लेक्स में मान्य है।"

'सिल्क रूट की तरह गेम चेंजर होगा भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा' : प्रधानममंत्री मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत–मध्य पूर्व–यूरोप आर्थिक गलियारा सिल्क रूट की तरह एक बड़ा गेम चेंजर होगा। आईएमईसी के लिए पिछले साल भारत की मेजबानी में आयोजित G20 शिखर सम्मेलन के दौरान एक समझौता हुआ था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (आईएमईसी) रेशम मार्ग (सिल्क रूट) की तरह एक बड़ा गेम चेंजर साबित होगा। आईएमईसी के लिए पिछले साल भारत की मेजबानी में आयोजित G20 शिखर सम्मेलन के दौरान एक समझौता हुआ था।

एक इंटरव्यू में पीएम मोदी ने आईएमईसी को लेकर कहा, 'खाड़ी देशों ने सकारात्मक भूमिका निभाई है। अमेरिका और यूरोप ने भी इस पर भारत का समर्थन किया है। G20 में सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान, पीएम नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के हाथ मिलाने की तस्वीरों ने विश्व स्तर पर सुर्खियां बटोरी थीं। उन्होंने कहा, जब हम वैश्विक भलाई के लिए काम करते हैं, तो कोई अगर-मगर की बात नहीं होती। आप दुनिया को अपने साथ ले सकते हैं और मेरी यही कोशिश थी। आप मुझे बताएं कि G8 और G20 का जन्म कैसे हुआ। जिन मुद्दों के लिए इनका गठन किया गया है, हमें उन मुद्दों से कभी भटकना नहीं चाहिए। मैंने हर किसी को आश्वस्त किया। कुछ लोगों के साथ मुझे निजी तौर पर बात करने की जरूरत थी। मैंने वैसा ही किया। दूसरी बात, मेरा इरादा ये था कि मैं आखिरी सत्र में प्रस्ताव नहीं लाऊंगा। मैं इसे इतनी जल्दी करूंगा कि लोग हैरान हो जाएंगे। इसलिए मैंने दूसरे दिन की घोषणा का काम पहले दिन ही पूरा कर लिया। यह मेरी रणनीति थी और वह रणनीति काम कर गई।'

बाइडन और मोहम्मद बिन सलमान के हाथ मिलाने के सवाल पर पीएम मोदी ने कहा कि उनकी दोनों नेताओं से मित्रता है। उन्होंने कहा, हमने आईएमईसी पर काम किया है, जो सिल्क रूट की तरह एक बड़ा गेम चेंजर होने जा रहा है। खाड़ी देशों की सकारात्मक और सक्रिय भूमिका थी। भारत को अच्छी भूमिका निभाने का मौका मिला। अमेरिका और यूरोप हमारे साथ थे। सभी ने सोचा कि एक ठोस और सकारात्मक परिणाम होगा। इसलिए हम उस पर मिलते थे। पीएम ने आगे कहा, इसलिए सऊदी किंग और राष्ट्रपति बाइडन को एक साथ लाने का अवसर था और मेरी दोनों के साथ अच्छी दोस्ती है।

पिछले साल सितंबर में नई दिल्ली में आयोजित G20 शिखर सम्मेलन के दौरान आईएमईसी के लिए भारत, अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), सऊदी अरब, फ्रांस, जर्मनी, इटली और यूरोपीय संघ ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे।

वर्षा काग ने समाज का नाम किया रोशन

परिवहन विशेष न्यूज

मैसूरू। रायपुर तहसील के समीप गांव देवली कलाँ के निवासी गुदड़राम काग की सुपुत्री वर्षा काग ने भविष्य का लक्ष्य तय करती हुई कड़ी मेहनत ओर लगन से कर्नाटक बोर्ड की ओर से माध्यमिक परिक्षा में 90.72 प्रतिशत अंक हासिल करके अपना परचम फहराया। वर्षा काग ने प्रदेश ओर समाज का नाम रोशन किया। देवली कलाँ गांव के निवासी गुदड़राम काग का परिवार हाल ही में मैसूरू में रहता है। जहां रहकर गुदड़राम काग कि सुपुत्री वर्षा काग पढ़ाई कर रही है। गत दिवस कर्नाटक बोर्ड की ओर से जारी किए गए परीक्षा परिणाम वर्षा ने 90.72 अंक हासिल करने पर उनकी माता लक्ष्मी ने बधाई दी। छात्रा की सफलता पर परिवार में खुशी का माहौल है। गुदड़राम काग ने बताया कि वर्षा नियमित रूप से 5 से 6 घंटे अध्यन करती ओर इस दौरान सोशल मिडिया से पुरी तरह दूरी बनाए रखी। आज इस सफलता का श्रेय उन्होंने अपने माता- पिता और शिक्षकों को दिया। इस दौरान सीरवी समाज मैसूर के कई पदाधिकारी एवं श्री आईजी क्षत्रिय सीरवी विकास सेवा समिति के पदाधिकारियों ने दूरभाष पर संपर्क कर छात्रा को बधाई दी।

कर्नाटक एवं राजस्थान से भारतीय जनता पार्टी नेता का हैदराबाद तेलंगाना अभिनंदन

तेलंगाना। मेदक तुपरान आई माता जी बडेर तुपरान में भव्य स्वागत समारोह आयोजित प्रदेश महामंत्री राजस्थान व तेलंगाना भाजपा प्रभारी जगवीर छाबा, एमएलसी बेंगलुरू केशव प्रसाद, नागापा श्री निवास एडवोकेट हाईकोर्ट तेलंगाना,टाटी वीटल ,भाजपा मंडल प्रेजिडेंट जानकी रामलू बीजेपी मैंबर मधुसुदन रेडी, सरगर्म मुरली गडम रवी सीरवी समाज तुपरान अध्यक्ष लीखमाराम मुलेवा, बाबु लाल काग धर्मीचंद रीणवा, धर्मेन्द्र गवड़ीया, बाबूलाल सोलंकी दिनेश देवासी, सोहनलाल, अशोक, दुदाराम, कैलाश, भंवरलाल सुरेश, मनोज,पवन जय खेताराम, हरीराम, मनीराम, रुपाराम, दिनेश महेन्द्र तेजाराम गोतम एवं सभी राजस्थानी प्रवासी, तुपरान बडेर अध्यक्ष लिखमाराम मुलेवा द्वारा धन्यवाद ज्ञापित।

सांसद अपराजिता षाड़ंगी प्रेस को सम्बोधित करते हुए की बड़ा घोषणा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड उडीशा

भुबनेस्वर् : भुवनेश्वर सांसद अपराजिता षाड़ंगी की प्रेस मीट। उन्होंने कहा कि बीजेपी सरकार आने पर कौन सी योजनाएं शुरू की जाएंगी । भाजपा सरकार में आयी तो स्कूलों में मध्याह्न भोजन एवं नाश्ता अनुपूरक योजना शुरू की जायेगी । अगर बीजेपी की सरकार बनी तो भी नॉर्थ और इंटीरियर और वंशा में 3 कैंसर अस्पताल होंगे ।बीजेपी ओडिशा में 2.5 लाख करोड़ रुपये का निजी निवेश लाएगी । बीजे द्वारा 3 कपड़ा मिलें और 7 कताई मिलें बंद कर दी गई हैं। भाजपा सरकार शिक्षकों को समान काम के लिए समान वेतन देगी। . भाजपा सरकार गर्भवती महिलाओं को लाने-ले जाने के लिए एंबुलेंस की सुचारू योजना शुरू करेगी। भाजपा सरकार में आई तो चिटफंड का डूबा पैसा 18 महीने में वापस मिलेगा। बीजेपी आंगनवाड़ी दीदी का मासिक वेतन 12,000 और सहायिका का वेतन 8,000 करेगी । मी मेधावी धाय योजना के तहत लड़की पैदा होने पर 2 लाख रुपये दिए जाएंगे। बीजेपी सरकार सुभद्रा योजना के तहत महिलाओं को 50 हजार के कैश वाउचर देगी । स्कूल मध्याह्न भोजन के साथ नाश्ते का समन्वय शुरू करेगा।

केजरीवाल के बाहर आने से इंडी गठबंधन को मिलेगा बूस्टर, ऐसे बढ़ेगा सियासी तापमान

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट से दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को मिली अंतरिम जमानत का इंडी गठबंधन पर बड़ा असर पड़ने वाला है। राजनीतिक जानकारों के मुताबिक, अभी बचे हुए चरणों में आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल के साथ गठबंधन के नेताओं के सियासी दौरे शुरू होंगे। चूंकि केजरीवाल की अनुपस्थिति में जिस तरह से सभी प्रमुख विपक्षी नेताओं ने सुनीता केजरीवाल के साथ दिल्ली से लेकर अन्य राज्यों में माहौल बनाकर रैलियां की थीं। वहीं अब केजरीवाल की उपस्थिति में कैंपेन को आगे बढ़ाए जाने की योजनाएं बनाई जाने लगी हैं।

हिंडाल्को इंडस्ट्रीज के बीच समझौता, स्वदेशी समुद्री-ग्रेड एल्यूमीनियम के निर्माण-आपूर्ति के लिए करार

आईसीजी और हिंडाल्को के आला अधिकारियों की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। तटीय सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए अधिक जहाजों को बल में शामिल करने की योजना है।

भारतीय तटरक्षक बल और हिंडाल्को इंडस्ट्रीज के बीच समझौता हुआ है। रक्षा मंत्रालय ने इस करार के बारे में जानकारी दी। शुक्रवार को जारी बयान में मंत्रालय ने बताया, 'यह समझौता स्वदेशी समुद्री-ग्रेड एल्यूमीनियम के निर्माण और आपूर्ति के लिए हैं, जिससे सार्वजनिक और निजी शिपयार्ड जहाजों का निर्माण कर सकें। इसके अलावा यह तिमाही मूल्य निर्धारण, आपूर्ति में प्राथमिकता और टर्नओवर छूट जैसे लाभ भी प्रदान करेगा।'

मंत्रालय के अनुसार, आईसीजी और हिंडाल्को के आला अधिकारियों की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। बता दें, तटरक्षक बल फिलहाल समुद्र में संचालन की क्षमता वाले एल्यूमीनियम पतवार वाले 67 जहाजों को संचालित कर रहा है। तटीय सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए और अधिक जहाजों को बल में शामिल करने की योजना है। इसमें स्वदेशी रूप से निर्मित समुद्री-ग्रेड एल्यूमीनियम का उपयोग किया जाएगा।

झारखंड में 13 मई से खुलेंगे स्कूल; मुंबई एयरपोर्ट से तीन दिन में 7.44 करोड़ का सोना जब्त

झारखंड सरकार ने शुक्रवार को एक नोटिस जारी कर सभी स्कूलों को 13 मई से कक्षाएं फिर से शुरू करने की अनुमति दी है। दरअसल, बढ़ते तापमान के कारण 29 अप्रैल से कक्षा आठवीं तक को छुट्टी दे दी गई थी, जबकि नौ से बारहवीं की कक्षाओं को सुबह सात से 11.30 बजे तक आयोजित करने की अनुमति दी गई थी। राज्य के अधिकांश क्षेत्रों में पिछले दो दिनों से बारिश हो रही है, इससे गर्मी से राहत मिली है।

मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सीमा शुल्क विभाग ने अलग-अलग मामलों में 7.44 करोड़ रुपये मूल्य का 11.62 किलोग्राम सोना और आईफोन और 12 लाख रुपये जब्त किए हैं। बताया गया है कि मंगलवार से गुरुवार के बीच प्रतिबंधित पदार्थ जब्ती के 18 मामलों में कार्रवाई की गई और सात लोगों को गिरफ्तार किया गया।

मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे पर दो वाहनों की टक्कर, तीन की मौत

महाराष्ट्र में सुबह-सुबह मुंबई-पुणे एक्सप्रेस वे पर ट्रक के ब्रेक फेल होने से वह दो गाड़ियों से टकरा गया। जिससे 3 लोगों की मौत हुई और 8 गंभीर रूप से घायल हैं। महाराष्ट्र में भोर घाट के पास मुंबई-पुणे एक्सप्रेस-वे पर एक ट्रक का ब्रेक फेल हो गया। ट्रक के ब्रेक फेल होने के कारण वह नियंत्रण खो बैठा ओर दो गाड़ियों में टक्कर मार दी। जिससे तीन लोग की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं 8 लोग गंभीर रूप से घायल हैं। घायलों को आनन-फानन में खोपोली के अस्पताल ले जाया गया।

श्रीलंका की जेल से रिहा हुए तीन मछुवारे

श्रीलंका जेल में बंद तीन मछुवारों को रिहा किया गया। रिहाई के बाद सुबह तीनों चेन्नई हवाई अड्डा पहुंचे। चार अप्रैल को तीन मछुवारों को रामेश्वरम के थंगाचिमादम क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया था। श्रीलंका पुलिस ने अनुसार इन्होंने मछली पकड़ने की समुद्री सीमा पार कर दी थी। इसलिए श्रीलंका नेवी ने उन्हें गिरफ्तार किया था। तीनों जेल से रिहा होकर शुक्रवार सुबह चेन्नई हवाई अड्डे पहुंचाए गए।

केरल में दो बसों के बीच दोपहिया वाहन फंस जाने से दो की मौत

शुक्रवार को सुबह लगभग सवा छह बड़े एक सड़क हादसे में दो लोगों की मौत हो गई। पलारीवट्टोम के पास केरल राज्य सड़क परिवहन निगम की दो बसों के बीच दो पहिया वाहन फंस जाने से दो लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने कहा कि दोपहिया वाहन केएसआरटीसी बस के पीछे था, तभी दूसरी बस पीछे से आई। पीछे वाली बस मोटरसाइकिल और उसके आगे वाली बस से टकरा गई। इससे मोटरसाइकिल पर सवार दोनों व्यक्तियों की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि पीछे वाली बस के चालक को हिरासत में ले लिया गया। केएसआरटीसी बस में सवार कुछ यात्रियों को मामूली चोटें आईं। पुलिस ने बताया कि पूरे मामले की जांच जारी है। पीड़ितों के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है।

महाराष्ट्र में नशे की हालत में हंगामा करने के आरोप मं तीन लड़कियों के खिलाफ मामला दर्ज

महाराष्ट्र के पालघर के विरार इलाके में तीन लड़कियां नशे की हालत में हंगामा कर रही थीं। इनका वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। जिसमें वे हंगामा करती हुई पुलिसकर्मियों से भी गाली-गलौज कर रही थीं। तीनों लड़कियों ने महिला पुलिसकर्मियों के साथ मारपीट भी की। तीनों पर आईपीसी की धारा 353, 323, 325, 504, 506 के तहत मामला दर्ज किया गया है। तीनों के वसई कोर्ट में भी पेश किया गया। तीनों को एक दिन की पुलिस हिरासत में भी भेजा गया।

संदेशखाली के भाजपा नेता ने कलकत्ता हाईकोर्ट का रुख किया

पंश्चिम बंगाल के संदेशखाली के भाजपा नेता गंगाधर कोयल ने कलकत्ता हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। उन्होंने दावा किया है कि कुछ वीडियो वायरल हो रहे हैं, जिनमें उनकी आवाज की नकल कर उन्हें बदनाम करने की साजिश रची जा रही है। उन्होंने केंद्रीय एजेंसियों से अपील की है कि उन्हें सुरक्षा प्रदान की जाए।

रक्षा मंत्रालय ने लागू किया अंतर सेवा संगठन अधिनियम

रक्षा मंत्रालय ने अंतर-सेवा संगठन (कमांड, नियंत्रण और अनुशासन) अधिनियम को एक राजपत्र में अधिसूचित किया गया है और इसे 10 मई से लागू किया गया है। थिएटर कमांड की परिकल्पना को पूरा करने के लिए यह काम किया गया है। इस कमांड (थिएटरीकरण) के तहत थल सेना, जल सेना और वायु सेना की एक एक यूनिट को एक मंच पर लाया जाएगा। तीनों सेनाओं की क्षमताओं को एकीकृत किया जाएगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023